पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

मार्च 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

2022

मार्च

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ
राजभाषा विभाग

प्रधान कार्यालय स्तरीय
राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

18 फरवरी 2022 को मार्च 2022 को समाप्त होने वाली तिमाही के लिए प्रधान कार्यालय स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन माननीय कार्यकारी निदेशक महोदय की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। बैठक में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर विचार–विमर्श किया गया तथा बैंक की हिंदी तिमाही गृह–पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के दिसंबर 2021 अंक का विमोचन किया गया। इस दौरान दिल्ली बैंक नराकास से बैंक को प्रदत्त पुरस्कारों का अनावरण भी किया गया।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

बैंक हाउस, प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली – 110008

मार्च 2022

मुख्य संरक्षक
श्री एस. कृष्णन
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक
श्री कोल्लेगाल वी राघवेन्द्र
कार्यकारी निदेशक

डॉ. रामजस यादव
कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक
श्री कामेश सेठी
महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक एवं प्रकाशक
श्री निखिल शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
श्री देवेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
श्रीमती मोनिका गुप्ता, प्रबंधक (राजभाषा)
श्री मोहन लाल, राजभाषा अधिकारी

ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in
पंजीकरण सं.: एफ.2(25) प्रैस. 91
(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 15/04/2022)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : जैना ऑफसेट प्रिंटर्स
ए 33/2, साइट–4, साहिबाबाद इंडस्ट्रीयल एरिया,
गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश
फोन नं. : 98112 69844
ई-मेल: jainaoffsetprinters@gmail.com

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	सपनें	4-5
5.	कार्टून-कोना	5
6.	नारी : अतीत से वर्तमान तक	6-9
7.	मेरी आवाज ही पहचान है.....गर याद रहे	10-12
8.	प्रधान कार्यालय का वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा निरीक्षण	13
9.	डिजिटल लैंडिंग	14-17
10	हिंदी/पंजाबी कार्यशाला का आयोजन	18-19
11.	मियादी मार्च	20-21
12.	प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2022	22-23
13.	मैसूर यात्रा	24-25
14.	कहानी – चलो , अब लौट चले!	26-28
15.	ग्राहक के मुख से	29
16.	काव्य-मंजूषा	30-31
17.	मेरे प्रिय कवि- निराला	32-33
18.	पीएसबी-मेरी जीवन रेखा	34-35
19.	जरा सोचिए!	35
20.	बैंक में अंचल कार्यालयों में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस	36-37
21.	मूल संथाली लेख और उसका हिंदी अनुवाद	38-41
22.	प्राज्ञ से पीएच.डी. तक	42-43
23.	कहानी – प्रणेता	44

आपकी कलम से

आपके कुशल निर्देशन व मार्गदर्शन में प्रकाशित की जा रही बैंक पत्रिका राजभाषा अंकुर का नवीनतम दिसंबर–2021 का अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं स्वीकार करें। पत्रिका के कलेवर को रोचक, सारगर्भित, प्रेरक और उपयोगी बनाना पत्रिका के प्रति सार्थक सोच को दर्शाता है जो पत्रिका के इस अंक में दिखाई दे रही है। बैंक पत्रिका में बैंक नराकास द्वारा संचालित गतिविधियों व बैंक की उपलब्धियों को भी छायाचित्र के माध्यम से बखूबी दर्शाया है। साथ ही विभिन्न विषयों के संदर्भ में भी मेरे बैंक साथियों ने अपने लेख द्वारा जानकारी दी है वह बहुत रुचिकर व ज्ञानवर्धक है। संक्षेपतः हिंदी के प्रति सम्मान व प्रचार–प्रसार तथा इसके उन्मुक्त प्रयोग में इस पत्रिका का योगदान काफी सराहनीय है। इस प्रकार के समसामयिक प्रकाशन के लिए राजभाषा विभाग के संपादक–मंडल को हार्दिक बधाई एवं आगामी अंकों के प्रकाशन हेतु अनंत शुभकामनाएं!

शिव कुमार गुप्ता

सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

हमारे बैंक की राजभाषा अंकुर पत्रिका का दिसंबर 2021 का अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम बैंक के अंचल कार्यालय भोपाल को वर्ष 2017–18 में राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करने के लिए बहुत–बहुत बधाई। संचारः अवरोध व निवारण, आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाएं, कुरूक्षेत्र : अनुपम पर्यटन स्थल आदि जैसे बेहद रोचक एवं ज्ञानवर्धक आलेखों ने इस पत्रिका की खूबसूरती में चार–चाँद लगा दिए हैं। इस पत्रिका के लिए संपादक मंडल की पूरी टीम को बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

कुलदीप सिंह

सहायक महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय फरीदकोट

प्रत्येक तिमाही की भाँति इस बार भी अंकुर के दिसंबर–2021 अंक से रू–ब–रू होने का मौका मिला। इस बार की प्रत्येक रचना रोचक और सारगर्भित है। इसमें विविध विषयों पर प्रकाश डाला गया है। कुरुक्षेत्र – अनुपम पर्यटन स्थल, मनमोहक रचना है, इसमें कुरुक्षेत्र के दृश्य को जीवंत रूप दिया गया है। अन्य रचनाएँ – आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाएं, ज़रा सोचिए आदि रचनाएं भी काबिले तारीफ है। अंत में, नोएडा अंचल के नराकास पुरस्कार प्राप्त वाले दृश्य को स्थान देने के लिए संपादक महोदय के प्रति आभार।

विनोद कुमार पांडेय

उप महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय नोएडा

हिंदी पत्रिका पी.एण्ड एस. बैंक 'राजभाषा अंकुर' का दिसंबर 2021 का अंक प्राप्त हुआ। राजभाषा विभाग द्वारा अन्य विभागों की रचनाओं को सम्मिलित करना एक सराहनीय कदम है और हमें यकीन है कि यह और भी उन्नति की ओर बढ़ेगी।
पत्रिका बेहद ही रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक है तथा मूल तमिल लेख बीमा एक उत्तम विश्वास का अनुबंधन है एवं उसके हिंदी अनुवाद के होने से पत्रिका अपनी विविधताओं को भी समेटे हुए है।

श्री सतबीर सिंह

उप महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय पटियाला

बैंक की हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का नवीनतम दिसंबर–2021 अंक प्राप्त हुआ जिसके लिए आपका आभार। सभी लेखकों ने जिस तरह से जटिल विषय को सहज एवं सरलतापूर्वक सबके समक्ष प्रस्तुत किया है वह 'गागर में सागर' भरने के समान है। राजभाषा अंकुर की विशिष्ट शैली, विषयों के प्रति पृथक दृष्टिकोण अत्यंत महत्व के साथ उभर कर आया है। मुझे विश्वास है कि 'राजभाषा अंकुर' नित नए विषयों को समाहित करती हुए बैंक के राजभाषा कार्यान्वयन और बैंक कार्मिकों की लेखन प्रतिभा को नया आयाम देगी। शुभकामनाओं सहित!

मनोज सिंह

अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय भोपाल

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

बैंक की गृह–पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के नूतन अंक मार्च–2022 के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका ज्ञानवर्धन और बैंक के आंतरिक गतिविधियों को प्रचारित करने के साथ–साथ बैंक कार्मिकों की लेखन प्रतिभा को निखारने का कार्य भी करती है। हमारा सदैव प्रयास रहता है कि पत्रिका को पाठकों की अपेक्षा के अनुरूप बनाने के साथ इसमें विविध साहित्यिक विधाओं को समाहित किया जाए।

पत्रिका के इस अंक में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मद्देनजर अनेक लेख, काव्य–मंजूषा में नारी संबंधी कविताओं को प्रमुख रूप से स्थान दिया गया है। इसके साथ ही बैंक के प्रधान कार्यालय तथा अंचल कार्यालयों में आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस–2022 के छायाचित्रों को भी पत्रिका में प्रकाशित किया गया है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक पृष्ठ के नीचे दी गई सूक्तियाँ भारतीय समाज में महिलाओं के महत्व को रेखांकित करती हैं। क्षेत्रीय भाषा की रचना के क्रम में संथाली भाषा के लेख को उसके हिंदी रूपांतरण सहित लिया गया है। विशेष स्तंभ 'जरा सोचिए' तथा 'कार्टून–कोना' वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिक नजर आते हैं। वित्तीय वर्ष के अंतिम माह मार्च का अपना विशेष महत्व होता है, इससे संबंधित लेख मनोरंजक तथा प्रभावपूर्ण है। बैंक के साथ कार्मिकों के कतिपय संस्मरण भी पत्रिका के इस अंक को शोभाएमान किए हुए हैं। काव्य–मंजूषा में गजलें मन को प्रफुल्लित करने वाली हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक हमेशा की भांति आपको पसंद आएगा तथापि अपनी अपेक्षाओं व पत्रिका के विषय में अपने सुझावों से हमें अवगत कराना न भूलें। पत्रिका के विगत अंक के लिए आपकी ओर से भेजी गई प्रतिक्रियाओं के लिए आपका आभार।

(कामेश सेठी)
महाप्रबंधक सह
मुख्य राजभाषा अधिकारी

कामेश सेठी

सपनें

नन्हीं सी एक परी अपनी पीठ पर पुस्तकों का बोझ लिए आँखों में न जाने कितने सपनों को संजोए स्कूल में प्रवेश करती है और मैं उसको देखता रहता हूं, जब तक कि वह मेरी आँखों से ओझल होकर स्कूल के अन्य बच्चों के बीच में खो न जाए। बच्चे की उम्र के साथ–साथ किताबों का बोझ भी बढ़ता गया। समय कब बीत गया पता ही ना चला कि वह बच्ची दसवीं कक्षा में पहुंच गई। यह कहानी मेरी बेटी की है जिसे मैं अपने निरंतर तबादलों के दबाव में कभी भी उसके बचपन को करीब से बढ़ते नहीं देख पाया। मेरी बहुत इच्छा थी कि मैं अपनी बच्ची के स्कूल में उसको बिना बताए पूरा 1 दिन उसकी बालपन की हरकतों को देख सकूं, उसका क्लास रूम कहां है, किस सीट पर वह बैठती है, किन दोस्तों के पास वह बैठती है, लंच कहाँ करती है, कैसे खेलती है, क्या बातें करती है, अपने सीनियर से कैसे व्यवहार करती है लेकिन यह मेरा सपना अधूरा रह गया।

बेटी के बचपन की सब चीजों को देखने के लिए बैंक से छुट्टी लेना शायद किसी को भी स्वीकार्य नहीं होगा और एक दिन दसवीं का रिजल्ट भी आ गया उसने सीबीएसई की दसवीं की परीक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त किया जिससे इस बार उसका नाम स्कूल के सर्वश्रेष्ठ बच्चों में भी आ गया। स्कूल के द्वारा सभी सर्वश्रेष्ठ बच्चों को सम्मानित किया गया परंतु मैं उस समारोह में भी नहीं जा सका। पिता होने के नाते उसके इस प्रदर्शन से मेरा आत्मविश्वास कुछ ज्यादा ही बढ़ गया और शाम को जब मैं उसके साथ बैठा था तब मेरे अंदर के आत्मविश्वास ने उससे कहा कि "इस बार आईआईटी जरूर निकलना चाहिए, बिटिया अपनी पूरी जान लगा दे।" मेरी बेटी सुरभि ने कहा "पापा अपने सपने मेरे आँखों से मत देखो" उसके वो वाक्य मेरे कानों में आज भी गूंजते हैं। छोटी सी उम्र में उसकी बातों में जो परिपक्वता मुझे दिखाई दी उसने मुझे उसके भीतर एक दार्शनिक, एक इंजीनियर, एक वैज्ञानिक होने के दर्शन कराए। मैं उसकी इन बातों को सुन कर हैरान रह गया ।

मैं उसकी बुद्धिमता की हमेशा तारीफ करता रहता लेकिन साथ ही अपने बुद्धिमान दोस्तों में कुछ को दिशाहीन होकर सर्वनाश की ओर जाते हुए देखता तो चिंतित हो जाता, इसलिए हमेशा उसे सही मार्ग में आगे बढ़ने की सलाह देता रहता। आईआईटी में असफल होने के बावजूद मेरा विश्वास हमेशा उससे कहता रहता कि "तुमसे मुझे बहुत उम्मीद है बिटिया"। एक पिता अपना बचपन अपने बच्चों में देखता है परंतु हमेशा आगे बढ़ने की दौड़ में मैंने उसको अपनी उम्मीदों की दौड़ में शामिल करा कर उसका बचपन छीन लिया, युवापन की उमंगे खत्म कर दी लेकिन दिल के एक कोने में आज भी उसके वाक्य "पापा अपने सपने मेरे आँखों से मत देखो" गुंजते रहते है परंतु मैं हमेशा उससे कहता रहा "भाग सुरभि भाग, तुम्हें

जब तक स्त्री शिक्षा को महत्व नहीं दिया जाएगा तब तक पुरुष शिक्षा भी व्यर्थ है। – मैथिलीशरण गुप्त

हमेशा जीतना है सब से आगे रहना है, यह दौड़ अभी बाकी है" वह मुझसे कहती है "पापा आप मुझसे इतनी उम्मीदें क्यों करते है?" मैं कहता "मुझे तुममें बहुत कुछ दिखता है बेटी।"

संघर्ष के इस दौर में अचानक उसका एक दिन डीआरडीओ बालासोर में चयन हो गया और वह रिसर्च के सागर में खो गई। उसका गंभीर स्वभाव रिसर्च के पेशे से काफी मिलता–जुलता है। वह कभी शहर से दूर अपने परिवार के बिना अकेले नहीं रही परंतु अकेले बालासोर के छोटे से कस्बे में बिना किसी दर्द और अकेलेपन को उजागर किए बिना लगभग दो साल रही मैं जब भी उससे फोन पर बात करता, वह हमेशा मुस्कुरा देती और कहती मैं यहाँ पर बहुत अच्छी हूँ। यह इस बात को दर्शाता है कि वह एक जुनूनी लड़की है और उसमें लगन की कोई कमी नहीं है। उसकी माँ हमेशा उसे विवाह के लिए प्रेरित करती और मैं हमेशा उसे आगे बढ़ने और जंग जीतने की बात करता और वह हमेशा कहती "पापा अपने सपने मेरी आँखों से मत देखो।" उसका अकेले का संघर्ष बिना दर्द जाहिर किए तथा शिकायत किए जुनून के साथ हमेशा कार्य करते रहना अन्य क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं को हिम्मत भी देता है और मैं कई बार उसका उदाहरण अपने बैंक में कार्यरत महिलाओं को भी देता रहा हूं जो दिल्ली, मुंबई, कोलकाता जैसे बड़े शहरों में भी रहकर अपने आप को असहाय बताती हैं। इस संघर्ष भरे जीवन में महिलाओं और पुरुषों के संघर्ष का तरीका लगभग बराबर हो चुका है। दोनों ही अपनी मंजिल पाने के लिए जी–जान से संघर्ष करने में उतारू हैं।

अपने दायित्वों एवं तबादलों के चक्कर में, मैं अपनी बेटी की दौड़ में केवल एक मूक दर्शक के अलावा और कुछ ना कर सका, उसका एक अच्छा कोच न बन सका। आज तक उससे यही कहता रहा दौड़ बेटी दौड़, जीतना है तुझे और वह मुझसे हमेशा कहती रही "पापा अपने सपने मेरी आँखों से मत देखो।"

महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय

कार्टून कोना

प्रदीप राय, सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक

रवि यादव

नारी : अतीत से वर्तमान तक

स्त्री को सृजन की शक्ति माना जाता है अर्थात् स्त्री से ही मानव जाति का अस्तित्व माना गया है। इस सृजन की शक्ति को विकसित–परिष्कृति कर उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, विचार, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, अवसर की समानता का सुअवसर प्रदान करना ही नारी सशक्तिकरण का आशय है। महिलाएं अब हर क्षेत्र में आगे आने लगी हैं। आज की नारी जाग्रत और सक्रीय हो चुकी है।

स्वामी विवेकानंद जी के शब्दों में – "नारी जब अपने ऊपर थोपी हुई बेड़ियों एवं कड़ियों को तोड़ने लगेगी तो विश्व की कोई शक्ति उसे नहीं रोक पायेगी"। वर्तमान में नारी ने रुढ़िवादी बेड़ियों को तोड़ना शुरु कर दिया है। यह एक सुखद संकेत है। लोगों की सोच बदल रही है, फिर भी इस दिशा में और भी प्रयास अपेक्षित है।

इस पृथ्वी पर मनुष्य का इतिहास हजारों वर्षों का है और इस हजारों वर्षों के इतिहास में मनुष्यों ने विकास–क्रम के सिद्धांत का पालन करते हुए इस पृथ्वी पर कई युग बिताए हैं। हमारी पृथ्वी पर असंख्य प्रजातियों का निवास है। इन असंख्य प्रजातियों में मनुष्य सबसे बुद्धिमान और विकसित प्रजाति माना जाता है। विज्ञान एवं पृथ्वी पर फैले विभिन्न धर्मों एवं उनके ग्रंथों यथा गीता, बाइबल, कुरान आदि को आधार रूप में लिया जाए तो यह कहा जा सकता है कि इस पृथ्वी पर मनुष्य की यात्रा कई युगों की रही है। हमने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में विकास तो कर लिया परंतु इन हजारों वर्षों से विकासरत हर युग में नारियों पर हमेशा से ही अत्याचार किया गया। विश्व के हर देश में किसी न किसी रूप में स्त्रियों का दमन एवं शोषण किया गया। यदि भारतीय परिपेक्ष्य में देखा जाए तो नारी को कभी श्रद्धा के साथ पूजा गया तो कभी दासता के बंधन में जकड़कर पशुवत व्यवहार किया गया। नारियों की स्थितियों में हमेशा परिवर्तन होता रहा है।

प्राचीन काल के भारत में महिलाओं का बहुत सम्मान किया जाता था परंतु जैसे–जैसे समय बीतता गया महिलाओं की स्थिति में भीषण बदलाव आया है। मध्यकालीन युग के मुकाबले पौराणिक युग में महिलाओं की सामाजिक स्थिति अच्छी थी। मनुस्मृति में नारी को गुरुतर मानते हुए यहाँ घोषित किया गया है कि – **"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता।"** अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। पारम्परिक विचारधारा में प्राचीन काल

जिस कुल में स्त्रियां सम्मानित होती हैं, उस कुल से देवगण प्रसन्न होते हैं। – मनुस्मृति

से ही स्त्री की पत्नी और माता की भूमिका में प्रशंसा तो की गई है किन्तु मानवीय रूप से उसे सदैव से ही बहुत हेय समझा गया है।

वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति काफी बेहतर थी। उन्हें शिक्षा का अधिकार था। समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था। वे कई तरह की सामाजिक अनुष्ठानों में भाग ले सकती थी। उन्हें सामाजिक, बौद्धिक एवं नैतिक रूप से पुरुषों के समान माना जाता था। उन्हें अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार था परंतु वैदिक काल में भी स्त्रियों को हेय की दृष्टि से देखा जाता था। ऋग्वेद, मैत्रयी संहिता में इसके स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं जिसमे नारी को झूठ का अवतार तथा भेड़िया की संज्ञा दी गई। उत्तर वैदिक युग में नारी की दशा में और गिरावट आई। उत्तर वैदिक युग पुरुष प्रधान समाज था। इसी युग में पुरुष तत्वों की प्रधानता बढ़ती गई। इस युग में स्त्रियों को समान्यतः निम्न दर्जा दिया जाने लगा। मध्यकाल आते–आते स्त्री जाति की दशा और भी दयनीय हो गई। महिलाओं की स्थिति के दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह निःसंदेह रूप से कहा जा सकता है कि मध्यकाल स्त्रियों के लिए कालायुग या अंधकार युग था। मेटसन ने हिन्दू संस्कृति में स्त्रियों की दयनीय स्थिति के लिए हिन्दू धर्म, जाति व्यवस्था, संयुक्त परिवार, इस्लामी शासन तथा ब्रिटिश उपनिवेशवाद इन पाँच कारकों को उत्तरदायी ठहराया है। हिन्दूवाद के आदर्शों के अनुसार पुरुषों को स्त्रियों से श्रेष्ठ माना जाता है और स्त्रियों व पुरुषों को भिन्न–भिन्न भूमिकाएँ निभानी चाहिए। स्त्रियों से माता व गृहणी की भूमिकाओं और पुरुषों से राजनीतिक व आर्थिक भूमिकाओं की आशा की जाती है। इसी युग में महिलाओं के साथ सबसे अधिक अत्याचार हुए। मुस्लिम शासकों की विलासतापूर्ण प्रवृति ने जहाँ एक ओर महिलाओं को भोग विलास की वस्तु में बदल दिया वही दूसरी ओर बाल–विवाह, पर्दा प्रथा, महिलाओं की अशिक्षा आदि विभिन्न समाजिक कुरीतियों

ने महिला की स्थिति को बद से बदतर कर दिया। पर्दा–प्रथा ने महिलाओं को घर की चार दिवारी में रहने को मजबूर कर दिया। महिलाओं के अस्तित्व पर प्रश्न–चिन्ह लगा दिया। पति परमेश्वर, पतिव्रत धर्म जैसी अमानवीय कुरीतियों ने महिलाओं की अस्तित्व पर प्रश्न–चिन्ह लगा दिया। पति परमेश्वर, पतिव्रत धर्म जैसी ध ार्मिक पाखंडों का कड़ाई से पालन इस काल में किया गया। इस काल में महिलाओं को अबला माना जाता था, जिसका जिक्र कवि मैथलीशरण गुप्त जी भी अपनी रचना में करते हैं– **"अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी।"** मध्यकाल में स्त्रियों के सम्मान, विकास, और सशक्तिकरण में कमी आई तो इसका कारण मध्यकालीन साहित्यकारों द्वारा महिलाओं को हासिए पर रखना है और जहाँ कहीं महिलाओं की चर्चा हुई वहाँ उन्हे या तो ताड़न की अधिकारी कहा गया या तो उसकी परछाई से दूर रहने का संदेश दिया गया। मध्यकालीन काव्य में मीरा को छोड़ बाकी सभी कवियों ने महिलाओं पर पुरुष वर्चस्व वादी विचारों को थोपा। नारी के हक की लड़ाई की आवाज सर्वप्रथम मीरा के काव्य में दिखती है। विशेष रूप से महिलाओं की भूमिका की चर्चा करने वाले साहित्य के स्त्रोत बहुत कम है। सन् 1730 के आसपास तंजायूर के व्यंबकायज्वन का स्त्री धर्म पद्धित इसका एक महत्वपूर्ण अपवाद है। इस पुस्तक में प्राचीन काल के अपस्तंभ सूत्र के काल के नारी सुलभ आचरण संबंधी नियमों को संकलित किया गया है। इसका मुखड़ा छंद इस प्रकार है:

मुख्यो धर्मः स्मृतिषु विहितो भार्तृशुश्रुषानम हिः
यथा
स्त्री का मुख्य कर्तव्य उसके पति की सेवा से जुड़ा हुआ है।

जहाँ सुश्रूषा शब्द अर्थात् "सुनने की चाह" में ईश्वर के प्रति भक्त की प्रार्थना से लेकर एक दास की निष्ठापूर्वक सेवा तक कई तरह के अर्थ समाहित है।

कुल मिलाकर देखे तो वैदिक काल से मध्यकाल तक महिलाओं के स्थिति में कई प्रकार के उतार–चढ़ाव आए। कभी महिलाओं को देवी कहकर पूजा गया तो कभी उसे अबला, रमणी कह कर भोगविलास की वस्तु समझा गया तो कभी उसे सहधर्मिणी, आर्धांगिनी आदि नामों से पुकारा गया तो कभी पुरुषवादी सोच ने उसे उसके अधिकारों से ही वंचित रखा। नारी मनुष्य वर्ग का अभिन्न अंग है। उसकी स्थिति का समाज पर और समाज का उसकी स्थिति पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। समाज निमार्ण में मात्र पुरुष ही भाग ले और नारी को घर के पिंजरे में ही कैद रखा जाए, यह अनुचित है। इसमें नारी वर्ग को और समाज को तो हानि है ही, प्रतिबंध लगाने वाले पुरुष भी उस हानि से नहीं बच सकते।

यदि इतिहास को साक्ष्य माना जाए तो मध्यकाल के बाद महिलाओं के पुनरोत्थान का काल ब्रिटिश काल से शुरु होता है। ब्रिटिश शासन के 200 वर्षों के इतिहास में सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर कई परिवर्तन हुए। ब्रिटिश काल में ही स्त्री शिक्षा, स्त्री और पुरुष में समानता, सती प्रथा एवं बाल–विवाह पर रोक आदि कई सामाजिक परिवर्तन के अलावा औद्योगिक जैसे आर्थिक बदलाव से महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुए।

उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारत के कुछ समाज सेवियों द्वारा स्थापित आर्य समाज, ब्रहा समाज एवं प्रार्थना समाज नें स्त्रियों की सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक स्थितियों को सबसे अधिक प्रभावित किया। राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, विधासागर, केशव चन्द्र सेन आदि समाज सुधारकों ने बाल विवाह पर रोक, स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता, दहेज प्रथा, विधवा पुनर्विवाह से संबंधित कई सामाजिक आंदोलन चलाए। परिणामस्वरूप सती प्रथा निषेध अधिनियम 1829, 1856 में हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1891 में एज ऑफ कन्सटेन्ट बिल, 1891 में बहु–विवाह रोकने के लिए विटिव मैरिज एक्ट पास हुआ। इस सभी के अलावा समाज में कई तरह की महिला संगठन का भी प्रार्दुभाव हुआ। इन सभी सामाजिक आंदोलनों एवं कानूनी बदलाव ने महिलाओं की स्थिति को सुधारने में अग्रणी भूमिका निभाई।

आजादी के बाद महिलाओं की स्थिति में ठोस सुधार हुए। आज महिलाओं को पुरुषों के बराबर का अधिकार मिलता है। आज महिलाएं वो सभी कार्य कर सकती है जिनसे उन्हें पहले वंचित रखा गया। भारतीय संविधान, भारत की महत्वपूर्ण राष्ट्रीय धरोहर है। 26 जनवरी, 1950 का दिन भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया। भारतीय संविधान के अंतर्गत महिलाओं को कई अधिकार दिए गए जिनमें अनुच्छेद 15 समता का अधिकार, स्त्रियों के लिए विशेष अधिकार, अनुच्छेद 16 लोकसेवाओं में अवसर की समानता का अधिकार, अनुच्छेद 23 स्त्रियों के प्रति मानव दुर्व्यवहार, बेगार, बलात् श्रम आदि का प्रतिषेध, अनुच्छेद 39 में स्त्रियों के समान कार्य के समान कार्य के लिए पुरुषों के बराबर वेतन, स्त्रियों की शोषण से रक्षा, अनुच्छेद 42 स्त्री से कठोर परिश्रम वाला काम न लेना,

स्त्रियाँ पुरूषों से अधिक बुद्धिमान होती हैं क्योंकि वे पुरूष से कम जानती हैं किंतु उससे अधिक समझती हैं। – जेम्स स्टीफेंस

खतरनाक मशीनों पर काम न करवाना आदि एवं अनुच्छेद 15 ऐसी प्रथाओं पर रोक लगाती है जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है। अनुच्छेद 243 में महिलाओं के लिए पंचायतों के अंतर्गत कतिपय स्थान आरक्षित किए गए। इन सभी के अलावा महिलाओं की रक्षा के लिए कई तरह के कानून बनाए गए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से सरकार द्वारा महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार लाने तथा उन्हें विकास की मुख्य धारा में समाहित करने हेतु अनेक कल्याणकारी योजनाओं और विकासात्मक कार्यक्रमों का संचालन किया गया है। 9 मार्च 2010 को राज्यसभा ने महिला आरक्षण बिल को पारित कर दिया जिसमे संसद और राज्य की विधान सभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था है। आज महिलाएं आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी बनी है जिसने हर क्षेत्र में पुरुषों से अधिक बढ़–चढ़ कर न केवल भाग लिया बल्कि उन्होंने हर क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता भी सिद्ध की। आज महिलाएं राजनीतिक, खेल, शिक्षा, चिकित्सा, अंतरिक्ष, प्रशासन, विज्ञान, अनुसंधान, साहित्य आदि हर क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रही है। इंदिरा गांधी, प्रतिभा देवी पाटिल, शीला दीक्षित, मीरा कुमारी, पीटी उषा, आशा भोंसले, सानिया मिर्जा, मैरीकॉम, साइना नेहवाल, सावित्रीबाई फुले, कल्पना चावला, किरण बेदी, अरुंधति रॉय आदि इसके स्पष्ट उदाहरण है।

यदि 'महिला सशक्तिकरण' को सचमुच समझना चाहते हैं तो इसे 'थेरीगाथा' से उद्धृत निम्न कविता से समझा जा सकता है:

"एक पूर्ण मुक्तवादी! मैं कितनी मुक्त
कितने आश्चर्यजनक रूप से मुक्त
रसोई के खटराग से मुक्त
ठनठनाते खाने के बरतनों से मुक्त
मुक्त उस बेईमान आदमी से।"

आज महिलाएं घर हो या बाहर हर जगह पुरुषों के समान ही अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रही है। आज महिलाएं जल, थल, वायु सभी सेनाओं में भाग लेकर देश की रक्षा कर रही हैं। अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए संघर्ष करती हुई स्त्रियों ने लम्बा रास्ता तय कर लिया है परंतु आज भी महिलाओं का एक बड़ा हिस्सा सदियों से सामाजिक अन्याय का शिकार हो रही है। आज भी समाज में महिलाएं दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, लिंग भेद, बलात्कार, घरेलू हिंसा, बाल विवाह, यौन उत्पीड़न, तीन तलाक जैसी कई बुराइयों को शिकार हो रही हैं। हालांकि महिलाओं के खिलाफ हो रहे इन अपराधों के खिलाफ भारत सरकार ने बड़ी संख्या में कानून बनाए जिनका अगर सही से पालन होता तो भारत में स्त्रियों के साथ अत्याचार बहुत पहले खत्म हो जाता परंतु पुरुषवादी मानसिकता के कारण ऐसा नहीं हो पा रहा है।

बेहतर समाज के निर्माण में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता को महसूस करते हुए विश्व पटल पर नारी शक्ति को जागृत करने के लिए हर वर्ष दुनिया भर में 8 मार्च का दिन अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। नारी जागरण को समर्पित इस दिवस पर एक थीम तय की जाती है। यह थीम हर साल अलग–अलग रखी जाती है।

जब तक हम अपने मन में स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव नहीं लाते तब तक महिलाओं को इसी तरह अपनी अस्मिता की रक्षा करने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। युगनायक एवं राष्ट्र निर्माता स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि जो जातियाँ नारियों का सम्मान करना नहीं जानती, वह न तो अतीत में उन्नति कर सकी, न आगे उन्नति कर सकेंगी। नारियां देश एवं समाज का अभिन्न अंग है।

महिला सशक्तिकरण के बिना देश व समाज में नारी को असली आजादी हासिल नहीं हो सकती। वह सदियों पुरानी मूढ़ताओं और दुष्टताओं से लोहा नहीं ले सकती। बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णय खुद नहीं ले सकती। स्त्री सशक्तिकरण के अभाव में वह इस योग्य नहीं बन सकती कि स्वयं अपनी निजी स्वतंत्रता और अपने फैसलों पर अधिकार पा सके। अतः आज के समय में महिलाओं के सहयोग के बिना किसी देश का विकास नहीं हो सकता। जरूरत है कि महिलाओं के उत्थान के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही नीतियों में पूर्ण रूप से अपना सहयोग देकर इसे सफल बनाएं।

अंचल कार्यालय मुंबई

भारती

मेरी आवाज ही पहचान है ...गर याद रहे

(एक सुरीले युग का अंत)

गायन मानव के लिए प्रायः उतना ही स्वाभाविक है जितना वाक्। कब से मनुष्य ने गाना प्रारंभ किया, यह बतलाना उतना ही कठिन है जितना कि कब से उसने बोलना प्रारंभ किया है। प्रामाणिक तौर पर देखें तो सबसे प्राचीन सभ्यताओं के अवशेष, मूर्तियों, मुद्राओं व भित्तिचित्रों से जाहिर होता है कि हजारों वर्ष पूर्व लोग संगीत से परिचित थे। संगीत मनुष्य में उर्जा का संचार करता है। मनुष्य सुखी हो या दुखी, प्रेम में हो अथवा प्रेम से विरक्त हुआ हो, उसके ज़हन में संगीत उतर ही आता है। मनुष्य के भावों को संगीत, गीत, संगीतकार और गीतकार के माध्यम से साकार रूप देता है। कई बार तो किसी परिस्थिति से गुजरते हुए संगीत सुनने पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो वह गीत हमारे लिए ही बना हो! गीतकार के गीतों के हर शब्द को गायक अपनी सुरीली आवज से जीवित कर उठता है।

गायन, वादन व नृत्य तीनों के समावेश को संगीत कहते हैं। संगीत नाम इन तीनों के एक साथ व्यवहार से पड़ा है। संगीत में भाव का होना अनिवार्य है। भाव के अभाव में संगीत अपना उद्देश्य खो देता है। भाव का मुख्य उद्देश्य कानों को अच्छा लगना है और यह काम एक गायक करता है। अपने राग, आलाप, स्वर से गीत जीवंत हो उठता है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की अनमोल परंपरा को आधुनिक काल में कई संगीत साधिकाओं ने अपनी योग्यता और सुरीली आवाज से उच्च स्थान पर पहुंचाया है। उनमें से एक हैं सुर सम्राज्ञी लता मंगेशकर!

लता मंगेशकर की आवाज के संबंध में पद्म विभूषण शास्त्रीय गायक पंडित कुमार गंधर्व अपना अनुभव साझां करते है **"बरसों पहले की बात है। मैं बीमार था। उस बीमारी में एक दिन मैंने सहज ही रेडियो लगाया और अचानक एक अद्वितीय स्वर मेरे कानों में पड़ा। स्वर सुनते ही मैंने अनुभव किया कि यह स्वर कुछ विशेष है, रोज का नहीं है। यह स्वर सीधे मेरे कलेजे से जा भिड़ा। मैं तो हैरान रह गया। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि यह स्वर किसका है।**

मैं तन्मयता से सुनता ही रहा। गाना समाप्त होते ही गायिका का नाम घोषित किया गया-लता मंगेशकर। नाम सुनते ही मैं चकित हो गया। मन-ही-मन एक संगति पाने का भी अनुभव हुआ। सुप्रसिद्ध गायक दीनानाथ मंगेशकर की अजब गायकी एक दूसरा स्वरूप लिए उन्हीं की कोमल आवाज में सुनने का अनुभव प्राप्त हुआ।" इतने बड़े शास्त्रीय गायक जब उनकी सुरीली आवज सुनकर मंत्रमुग्ध हो गए, तो हमारी बिसात क्या होगी। उनके जीवन के बारे में जानना मेरे लिए एक जिज्ञासा का विषय है। उनके संपूर्ण जीवन को इस लेख में उतारने का प्रयास किया गया है।

लता मंगेश्कर का जन्म 28 सितम्बर, 1929 को इंदौर (मध्यप्रदेश) में हुआ था। उनके पिता श्री दीनानाथ मंगेश्कर एक कुशल रंगमंचीय गायक थे। लता मंगेशकर ने पाँच वर्ष की आयु से अपने पिता से संगीत सीखना शुरु किया। उनके साथ उनकी बहने भी संगीत सीखा करती थी। पाँच वर्ष की आयु में ही इन्हें नाटक में अभिनय का अवसर भी मिला। शुरुआत भले ही अभिनय से हुई हो परंतु

नारियाँ इसलिए अधिकार चाहती हैं कि उनका सदुपयोग करें और पुरूषों को उनका दुरूपयोग करने से रोकें। – प्रेमचंद

इनकी रुचि तो संगीत में ही थी। लता जी ने अपनी सुर साधना से छोटी सी उम्र में ही महारत हासिल कर ली थी। हिंदी संगीत को इनकी आवाज के रूप में एक नयापन मिला। एक ओर लोग उनकी सादगी की बात करते हैं वहीं उनके स्वभाव को लेकर भी चर्चाएं हुआ करती थी। उनकी दो चोटियां और सफेद रंग की साड़ी सादगी का प्रतीक बन गई। लोग उन्हें सरस्वती के रूप में देखते हैं। इतनी बड़ी कलाकार होने के बावजूद भी वे अभिमान से दूर थी। 1999 में जब भारत रत्न सम्मान उनके स्थान पर पंडित रविशंकर को दिया गया, तो उनके प्रशंसक विरोध और रोष व्यक्त करने लगे। लेकिन लता जी के मन में ऐसा कुछ न था। उनका मानना था, कि पंडित रविशंकर बहुत बड़े कलाकार हैं। उनके निर्देशन में जब फिल्म अनुराधा के गाना गा रही थी, तब वह बहुत घबराई हुई थी। बार–बार यही प्रार्थना करती रही कि मैं उस तरह गा सकूं जिस तरह पंडित जी ने सोचा है। यह सम्मान उन्हें पहले मिलना चाहिए।

पिता की मृत्यु के बाद नवयुग चित्रपट कंपनी के मालिक और उनके पिता के करीबी मित्र विनायक दामोदर ने लता मंगेशकर की देखभाल की और उन्हें करियर में आगे बढ़ने में मदद की। विनायक दामोदर ने उन्हें मराठी फिल्म 'पहिली मंगला गौर' में एक छोटी–सी भूमिका दी जिसमें उन्होंने एक गीत गाया। वर्ष 1945 में विनायक जी की कंपनी के मुंबई स्थानंतरित होने के बाद वह भी मुंबई रवाना हुई। वहां उन्होंने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा लेनी आरंभ की। उन्होंने वसंत जोगलेकर की हिंदी भाषा की फिल्म के लिए एक गीत गाया। विनायक दामोदर की पहली फिल्म 'बड़ी मां' में लता मंगेश्कर और उनकी छोटी बहन आशा ने छोटी भूमिकाएं निभाई। उस फिल्म में उन्होंने एक भजन भी गाया। वर्ष 1948 में विनायक दामोदर की मृत्यु के बाद, संगीत निर्देशक गुलाम हैदर ने उन्हें एक गायिका के रूप में तैयार करना शुरु किया। गुलाम हैदर ने वर्ष 1948 में उन्हें शशधर मुखर्जी से मिलवाया जो उस समय फिल्म शहीद पर

काम कर रहे थे। लेकिन शशधर मुखर्जी ने उनकी आवाज पतली कहकर खारिज कर दिया। गुलाम हैदर ने उन्हें अपना पहला ब्रेक फिल्म मजबूर वर्ष 1948 में **"दिल मेरा तोड़ा, मुझे कहीं का न छोड़ा"** गाने के साथ दिया जो उनकी सबसे बड़ी सफलता बनी। अपने 84वें जन्मदिन पर एक साक्षात्कार में, उन्होंने कहा कि "**गुलाम हैदर वास्तव में मेरे गॉदफादर हैं। वह पहले संगीत निर्देशक थे जिन्होंने मेरी प्रतिभा पर पूर्ण विश्वास दिखाया"।** अपनी पहली मुख्य फिल्म 'महल' (1949) जिसे संगीत निर्देशक खेमचंद्र प्रकाश ने संगीतबद्ध किया और जिसे अभिनेत्री मधुबाला पर फिल्माया बहुत प्रसिद्ध हुआ। यह उनके लिए एक निर्णायक क्षण था। पहले पार्श्वगायक परदे के पीछे छिपे और बिना श्रेय के बने रहते थे। यह गाना इतना प्रसिद्ध हुआ कि रेडियो गोवा ने उनकी पहचान उजागर कर दी और वह अपने आप में सितारा बन गईं। फिल्म 'महल' में उनका गाया गाना 'आएगा आने वाला' के फौरन बाद हिंदी फिल्म जगत ने मान लिया की यह आवाज बहुत दूर तक जाएगी। यह वह जमाना था जब हिंदी फिल्मी संगीत पर शमशाद बेगम, नूरजहां और जोहराबाई अंबालेवाली जैसी वजनदार आवाज वाली गायिकाओं का राज चलता था। इस गीत की कामयाबी के बाद लता मंगेश्कर ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। 1950 से 1970 का दौर भारतीय फिल्म संगीत का बेहतरीन दौर माना जाता है। जब एक से बढ़कर एक गायक, संगीतकार, गीतकार और फिल्मकार थे उस समय सबने मिलकर बेहतरीन फिल्में और संगीत रचा और लता मंगेशकर के स्वरों में ढल कर एक से बढ़कर एक गीत सुनने को मिलें। वो एक ऐसा दौर बन गया जब फिल्में महज इसलिए सफल हो रही थी क्योंकि उसमें लता जी के गाए हुए गीत थे। हर गाने को लता जी विशेष बना देती थीं। चाहे वो रोमांटिक गाने हो, राग आधारित हो, भजन या देशभक्ति हो। उनके गाए गीत अस्सी से नब्बे के दशक में भी गूंजते थे। मधुबाला से लेकर माधुरी दीक्षित तक जैसी तमाम अभिनेत्रियों को उन्होंने आवाज दी और उनकी आवाज किसी पर भी बेमेल महसूस नहीं होती थी।

लता जी ने जो ठाना, उसे पूरी तरह निभाया भी। बात उन दिनों की है, जब लता फिल्मों में गानों की शुरुआत कर रही थी। जब गुलाम हैदर ने उनका परिचय दिलीप कुमार से करवाया गया। तब दिलीप कुमार ने उनका नाम सुनते ही कहा, मराठी लोग उर्दू कहां बोल पाएंगे। बात लता जी के दिल में घर कर गई। उन्होंने उसी समय उर्दू सीखना आरंभ कर दी। उनकी गाई गजलें और नात किस कदर मशहूर हुए ये अपने आप में करिश्मा है। इस पर लता जी ने ठाना की उन्हें रॉयल्टी मिलनी चाहिए। इस बात पर मोहम्मद रफी

के अलावा राज कपूर से भी टकराव हुआ। तब उन्होंने राजकपूर जी के लिए गाने से इंकार कर दिया। आखिरकार बॉबी फिल्म के निर्माण के दौरान खुद आकर लताजी को मानना पड़ा, चलो तुम गाओ मैं रॉयल्टी दूंगा। इसी तरह लता जी की मांग थी कि अगर किसी गाने के अल्फाज में अश्लीलता आई या गाने से उन्हें संतुष्टि नहीं मिली तो वह नहीं गाएंगी।

सात दशकों की उनकी स्वर यात्रा में उनकी व्यक्तिगत ख्याति शिखर पर थी। लता जी की एक खासियत यह थी कि उनका कई भाषाओं पर अधिकार था। इन्होंने लगभग 20 से ज्यादा भाषाओं में तीस हजार से ज्यादा फिल्मी, गैर फिल्मी गीत और भजन भी गाए। लेकिन उनकी पहचान भारतीय सिनेमा में एक पार्श्वगायक के रूप में रही। सन् 1974 में विश्व में सबसे अधिक गीत गाने का 'गिनीज बुक रिकॉर्ड' इनके नाम पर दर्ज है। लता जी महज एक दिन के लिए स्कूल गई थी। इसकी वजह यह रही कि जब वह पहले दिन अपनी छोटी बहन आशा को स्कूल लेकर गई तो अध्यापक ने आशा को यह कहकर स्कूल से निकाल दिया कि उन्हें भी स्कूल में फीस देनी होगी। बाद में लता जी ने निश्चय किया कि वह कभी स्कूल नहीं जाएंगी। हालांकि बाद में उन्हें न्यूयार्क यूनिवर्सिटी सहित छह विश्वविद्यालयों में मानक उपाधि से नवाजा गया। वे फिल्म जगत की पहली महिला हैं जिन्हें वर्ष 2001 में भारत रत्न और वर्ष 1989 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्राप्त है। सन 1974 में लंदन के रॉयल अल्बर्ट हॉल में उन्हें पहली भारतीय गायिका के रूप में गाने का अवसर प्राप्त है। चीनी आक्रमण के समय पंडित प्रदीप के अमर गीत 'ए मेरे वतन के लोगों' गीत गाने के लिए दिल्ली के नेशनल स्टेडियम में बुलाया गया। गीत को सुनकर देश के पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु समेत स्टेडियम में मौजूद तमाम लोगों की आँखें नम हो गई थी। पंडित नेहरु ने इसके बाद उन्हें 'स्वर कोकिला' की उपाधि से नवाजा। स्वर कोकिला' लता मंगेश्कर की आवाज सुनकर कभी किसी की आंखों में आंसू आए, तो कभी सीमा पर खड़े जवानों का हौसला बुलंद हुआ। कोविड जटिलताओं से जूझते हुए 92 वर्ष की आयु में 6 फरवरी, 2022 में ये ब्रम्हांड में विलीन हो गईं। भारत सरकार ने दो दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की और उनके सम्मान में पूरे भारत में 6 और 7 फरवरी को राष्ट्रीय झंडा झुका रहा। गायिकी के क्षेत्र में इनका स्थान कभी नहीं भरा जा सकता। अंत में यह कहना होगा कि इनकी आवाज ही पहचान है...।

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग

रचनाकारों से निवेदन

रचनाकारों से निवेदन है कि बैंक के प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही तिमाही हिंदी गृह–पत्रिका "राजभाषा अंकुर" में प्रकाशन हेतु लेख भेजते समय लेख के अंत में अपना नाम, शाखा/कार्यालय का नाम व पता, मोबाइल नंबर तथा अपना बैंक खाता संख्या व आईएफएससी कोड अवश्य लिखें। इसके साथ ही लेख के संबंध में मौलिकता प्रमाण–पत्र और अपना फोटो भी उपलब्ध कराएं। सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्य उपरोक्त के अतिरिक्त अपने घर का पता तथा स्थायी खाता संख्या (पैन नंबर) का भी उल्लेख करें।

–मुख्य संपादक

प्रेम किस प्रकार किया जाता हैं, इसे केवल नारियाँ ही जानती हैं। – मोपासा

प्रधान कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण

वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय द्वारा दिनांक 15.03.2022 को बैंक के प्रधान कार्यालय में राजभाषा संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान वित्तीय सेवाएं विभाग की ओर से निरीक्षण हेतु श्री भीम सिंह, उप निदेशक (राजभाषा) ने बैंक में हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन का जायज़ा लिया। उन्होने महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री कामेश सेठी के साथ बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नवोन्मेषी कार्यों, उपायों पर चर्चा की।

विभाष कुमार

डिजिटल लैंडिंग

प्रथम चरण

बैंकिंग व्यवस्था का प्रथम चरण अट्ठारहवीं शताब्दी के मध्य में माना जा सकता है जब कलकत्ता, मद्रास और मुंबई जैसे बड़े शहरों में निजी प्रयासों से बैंकों की स्थापना हुई थी परंतु इसकी पहुँच और विस्तार कुछ लोगों तक ही सीमित रही। देश में बैंकों की स्थापना और वास्तविक विस्तार उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ में शुरू हुआ। आज हम देश में आर्थिक तंत्र की रीढ़ कहने वाले सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को देखते है उसमें से अधिकांश बैंकों की स्थापना उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ में ही हुई। वर्तमान में हम अपने देश में सशक्त एवं सुदृढ़ बैंकिंग व्यवस्था देखते है उसकी नींव आजादी के बाद पहले 1949 में बैंकों के नियामक संस्था भारतीय रिजर्व बैंक और बाद में क्रमशः 1969 और 1980 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण के बाद हम देख सकते है।

द्वितीय चरण

उदारीकरण के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था के साथ–साथ बैंकिंग क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन आया है। बैंकिंग क्षेत्र पर शोध करने वाले विद्यार्थी उदारीकरण के बाद एवं पूर्व की बैंकिंग का अध्ययन कर सकते है। उदारीकरण जहाँ हमारी अर्थव्यवस्था को खोलकर वैश्विक अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम बढ़ाया है कुछ उसी तरह बैंकिंग क्षेत्र में भी काफी बदलाव किए गए। बैंकिंग कारोबार में भी निजी और विदेशी क्षेत्र के बैंकों के द्वार खोले गए। बैंकों के बीच एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित हुई। भारतीय बैंकिंग क्षेत्र भी वैश्विक होने के लिए अपना कदम बढ़ाना शुरू कर दिया ।

तृतीय चरण

संचार क्रांति के उपरांत पिछले एक दशक में देश ने कई महत्वपूर्ण बदलाव देखें है। बैंकिंग जगत भी इस बदलाव में भागीदार रहा है।

हम डिजिटल बैंकिंग की तरह काफी तेजी से बढ़ रहे है। डिजिटल माध्यम से लेनदेन के मामले में आज हम दुनिया में नंबर एक पर पहुँच गए है। डिजिटल बैंकिंग का अगला चरण डिजिटल लैंडिंग है।

चतुर्थ चरण

हम आज डिजिटल बैंकिंग के नए कालखंड में जी रहे है। जहाँ डिजिटल भुगतान आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था की जीवनदायिनी है। डिजिटल भुगतान को सशक्त करते हुए आज जारीकर्ता बैंक, वित्तीय संस्थाएं नेटवर्क, भुगतान संसाधक और मर्चेंट आदि भुगतान प्रणाली को प्रतिस्पर्धा में तैयार रहने के लिए भारी निवेश कर रहे हैं। ग्राहकों की प्राथमिकताओं और क्षेत्र–विशिष्ट व्यावसायिक

नारी के बिना पुरूष का बचपन असहाय है, युवावस्था सुख रहित है और बुढ़ापा सांत्वना देने वाले सच्चे और वफादार साथी से रहित है। – जौन

आवश्यकताओं के साथ बेहतर तालमेल के लिए प्रौद्योगिकी में कई तरह के सुधार कर बैंक और वित्तीय सेवाएं से जुड़ी संस्था इसका लाभ भी उठा रहे हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने भी पीएसबी यूनिक के माध्यम से एक इस क्षेत्र में मजबूत कदम बढ़ाया है।

कोविड–19 महामारी के कारण दुनिया भर में आर्थिक गतिविधियां प्रभावित हुई है। रोजगार पर असर पड़ा है। सेवा और उद्योग क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों पर इसका सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा है। रिटेल, एसएमई क्षेत्र से जुड़े लोगो को विशेष रूप से अपने व्यवसायों को चालू रखने के लिए संकट के दौरान धन जुटाने की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। डिजिटल लैंडिंग से विशेष रूप से रिटेल, एसएमई क्षेत्र में कई अवसर मिलने की उम्मीद है। इसी के मद्देनजर कोविड कालखंड में डिजिटल लैंडिंग से संबद्ध कई कंपनी खुली और पूर्व से चल रही कंपनियों का पोर्टफोलियो बढ़ा है। उदाहरण के लिए, कोविड काल खंड के प्रारंभ में अप्रैल 2020 में इंडियालैंड्स (IndiaLends) ने डिजिटल लैंडिंग 2.0 लॉन्च किया, जिसमें ऋण, बीमा और ऋण हेतु टचलेस और संपर्क रहित उत्पादों की एक श्रृंखला शामिल है। इस चरण में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक भी पीछे नहीं रहे है। कोरोना काल में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में सर्वप्रथम 'बैंक ऑफ बड़ौदा' ने ऋण आबंटन हेतु डिजिटल फ्लैटफॉर्म बनाकर ऑनलाइन ऋण आबंटन की शुरुआत की है। इसके बाद 'बैंक ऑफ इंडिया' ने भी अपना डिजिटल लैंडिंग प्लेटफार्म लॉन्च किया है।

देश में स्मार्ट फोन को तेजी से अपनाने, इंटरनेट एक्सेस और भारत में उपभोक्तावाद की ओर बदलाव ने डिजिटल ऋण देने वाले उद्यमों के विकास को बढ़ावा दिया। देश में वर्तमान समय में लगभग 1100 ऑनलाइन ऋण देने वाली कंपनी/वित्तीय संस्थान सक्रिय हैं जो एक सहज प्रक्रिया के माध्यम से ऋणदाता और लेनदार के बीच के अंतर को कम करने की कोशिश कर रहे हैं।

एक दृष्टि वैश्विक स्तर पर डिजिटल लैंडिंग की स्थिति

वैश्विक स्तर पर भी डिजिटल माध्यम से लैंडिंग एक नवीन प्रयोग है। डिजिटल व्यवहार में वृद्धि के कारण वैश्विक स्तर पर सरकारी नियमों द्वारा इसे नियंत्रित किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, सितंबर 2020 में, थाईलैंड के केंद्रीय बैंक ने बढ़ते डिजिटल व्यक्तिगत ऋण बाजार के लिए नए नियम प्रकाशित किए। इसने यह भी सिफारिश की कि ऋण प्रदाता परिचालन प्रक्रियाओं जैसे कि ऋण की पेशकश, ऋण चुकौती और सूचना प्रकटीकरण, जैसे ब्याज दरों, शुल्क और दंड के लिए अधिक डिजिटल तकनीक लागू करें।

चीन के ऑनलाइन ऋण क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में नियमों की

कमी के कारण इस माध्यम से ऋण आबंटन में तेजी से विकास हुआ है जिसके कारण अध्ययन किया गया कि बाजार में ऋण प्रदाता इकाइयों की संख्या में वृद्धि हुई है। हालांकि, 2015 में उथल–पुथल के पहले संकेत के बाद, जब 900,000 निवेशकों के साथ सबसे बड़े ऋणदाताओं में से एक 'एजुबाओ' को धोखाधड़ी के लेनदेन के लिए पकड़ा गया था। जिसके बाद चीन के नियामकों ने तेजी से सख्त नीतियां/नियम लागू करना शुरू कर दिया। जिसमें एक संरक्षक बैंक की नियुक्ति शामिल थी। निवेश के उपयोग पर पूर्ण प्रकटीकरण और अधिकतम उधार राशि पर कैप जो व्यक्तियों (सीएनवाई 1 मिलियन) और कंपनियों (सीएनवाई 5 मिलियन) तक बढ़ाई जा सकती है।

इसके अलावा, जापान सरकार नागरिकों में कैशलेस व्यवहार को विकसित करने के लिए कार्यक्रम शुरू कर रही है। सरकार ने 2025 तक कैशलेस भुगतान को 40% तक बढ़ाने के लिए एक पहल शुरू की। 1 अक्टूबर, 2019 को उपभोग कर को 8% से बढ़ाकर 10% करने के साथ, कई छूट योजनाएं लागू की गईं जिसमें कैशलेस भुगतान टर्मिनलों की स्थापना को सब्सिडी दी गई है। पंजीकृत एसएमई या फ्रैंचाइजी स्टोर से खरीदारी करते समय व्यापारियों और उपभोक्ताओं के लिए 2% या 5% की छूट प्रदान करते हैं।

बाजार का रूझान

'डिजिटल व्यवहार' के साथ संभावित ऋण खरीदारों की संख्या धीरे–धीरे बढ़ती जा रही है। वित्तीय सेवा प्रौद्योगिकी समाधानों के अग्रणी वैश्विक प्रदाता फिशर, इंक के नवीनतम 'उम्मीदों और उपभोक्ता अनुभव रुझान' सर्वेक्षण में कहा गया है कि पिछले दो वर्षों में ऋण के लिए आवेदन करने वाले लगभग दो तिहाई लोग आंशिक रूप से या पूरी तरह से ऑनलाइन ऐसा करते हैं। वर्ष 2018 से इसमें उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। इस वृद्धि का एक बड़ा हिस्सा स्मार्टफोन और टैबलेट के बढ़ते एवं उनके उपयोग के कारण है।

ऐसे ग्राहक जिनके पास कुछ वर्षों का कार्य अनुभव है और कोई क्रेडिट इतिहास नहीं है। वैसे स्थिति में हम पाते हैं कि उनके ऋण या तो स्वीकृत नहीं होते या उच्च ब्याज दरों पर मिलते हैं। इसके अलावा, पारंपरिक बैंकों में, छोटे व्यवसायों और कॉर्पोरेट उधार औसत ऋण देने के लिए 'निर्णय लेने का समय' तीन से पाँच सप्ताह के बीच होता है, औसत 'ऋण करने का समय' लगभग तीन महीने है। ऐसी चुनौतियाँ उन ग्राहकों के 'डिजिटल व्यवहार' के तरफ ले जा रही हैं जो डिजिटल उधार अनुप्रयोगों तक पहुँचने के लिए ऑनलाइन उपकरणों की ओर रुख कर रहे हैं। अध्ययन किए गए बाजार में उपभोक्ता अपेक्षा और व्यवहार के विकास को बढ़ाने वाला एक प्रमुख कारक बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के डिजिटलीकरण द्वारा प्रदान किए जाने वाले कई लाभों के कारण बदलती है। ग्राहक विविध पृष्ठभूमि से हो सकते हैं और उन्हें व्यक्तिगत ऋण से लेकर रिटेल, एसएमई और गृह ऋण सहित कई अन्य उद्देश्यों के लिए ऋण की आवश्यकता हो सकती है।

इसके अलावा, कई तकनीकी प्रगति को अपनाने जैसे कि स्मार्टफोन को अपनाने के प्रसार ने कई एंड–यूजर वर्टिकल में डिजिटल बैंकिंग को अपनाने में वृद्धि की है। साथ ही, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी तकनीकों से बैंकों को लाभ होता है क्योंकि वे ग्राहकों के बारे में बड़ी मात्रा में जानकारी संरक्षित कर सकते हैं। इसके बाद इस डेटा और जानकारी की तुलना उन उपयुक्त सेवाओं/समाधानों के बारे में परिणाम प्राप्त करने के लिए की जाती है जो ग्राहक चाहते हैं, जिसने ग्राहक संबंधों को विकसित करने में अनिवार्य रूप से सहायता की है।

डिजिटल लैंडिंग मार्केट अभी शैशवावस्था में है। बाजार मूल्य के दृष्टि से देखे तो यह वर्ष 2020 में यूएसडी 311.06 बिलियन था और वर्ष 2026 तक यूएसडी 587.27 बिलियन तक पहुंचने और पूर्वानुमान अवधि (वर्ष 2021–2026) के दौरान लगभग 11.9% का सीएजीआर दर्ज करने की उम्मीद है। बीएफएसआई उद्योग में डिजिटलीकरण को तेजी से अपनाने के कारण उधार परिदृश्य पिछले कुछ वर्षों में काफी बदल गया है। उधार देने का पारंपरिक रूप अभी भी दुनिया के कई हिस्सों में प्रचलित है। हालांकि, डिजिटल समाधान प्रदाताओं द्वारा प्रदान किए गए लाभ तेजी से उद्यमों में डिजिटल ऋण समाधान और सेवाओं को अपनाने का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

डिजिटल लैंडिंग प्लेटफार्म की आवश्यकता क्यों ?

दरअसल, कुछ लोगों की आमदनी कम होने या कई बार अनिश्चित होने से न तो बैंक, न ही ऋण उन्हें प्राप्त हो पता है और न ही कोई अन्य वित्तीय संस्थान ही उन्हें ऋण देने में उत्साह दिखती

हैं। अगर कोई बैंक ऋण देने को तैयार भी हो तो इतने दस्तावेजों और रेफरेंस की शर्त जोड़ देता है जिसे पूरा करना उस उपभोक्ता के बस में नहीं रहता है जबकि मोबाइल एप्प के जरिए ऋण देने वाली कंपनियां पैन कार्ड, आधार कार्ड जैसे बेसिक दस्तावेजों और रेफरेंस लेकर कुछ घंटे में ऋण मंजूर कर खाते में पैसे भेज देती हैं। इस क्षेत्र में सक्रिय कंपनियां बाजार के अपनी पेशकशों में सुधार लाने और बाजार में अधिकतम आकर्षण हासिल करने के लिए कई नवाचार कर रहे हैं।

प्रतिस्पर्धी परिदृश्य

डिजिटल लैंडिंग मार्केट का प्रतिस्पर्धी परिदृश्य कई समाधान प्रदाताओं की उपस्थिति के कारण अभी संगठित और सशक्त नहीं है जिसके कारण इनमें से कोई भी बाजार में बहुमत हिस्सेदारी नहीं रखता है। निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और वित्तीय संस्थाएं धीरे–धीरे स्वयं अथवा किसी ऑनलाइन स्टार्टअप एप्प से टाईअप करके इस क्षेत्र में प्रवेश कर रही है।

डिजिटल भुगतान आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था की जीवनदायिनी है। जारीकर्ता, नेटवर्क, भुगतान संसाधक और मर्चेंट एक्वायरर्स अपनी भुगतान प्रणाली को सर्वसुलभ करने के लिए भारी निवेश कर रहे हैं। ग्राहकों की प्राथमिकताओं और क्षेत्र–विशिष्ट व्यावसायिक आवश्यकताओं के साथ बेहतर तालमेल के लिए प्रौद्योगिकी के माध्यम से डिजिटल प्रगति का लाभ उठा रहे हैं। तकनीकी विकास के साथ–साथ मोबाइल क्रांति के कारण पिछले एक दशक में बैंकिंग क्षेत्र में जितनी तेजी से बदलाव आए है उतनी तेजी से शायद ही कभी आए होंगे। स्वदेशी डिजिटल प्लेटफार्म, रुपे कार्ड के व्यापक प्रचलन में आने के बाद प्लाटिक कार्ड आदि के माध्यम से डिजिटल भुगतान अप्रत्याशित वृद्धि देखने को मिली है। भुगतान प्रौद्योगिकी में नवाचार काफी तेजी से चल रही है जिसके कारण इसे और अधिक सुलभ और सुरक्षित बनाने की प्रक्रिया चल रही है। रीयल–टाइम भुगतान, जो पहले से ही कई भौगोलिक क्षेत्रों में आम बात है, भारत में भी जोर पकड़ रहा है।

डिजिटल लैंडिंग का भविष्य

जैसा कि महानगर एवं बड़े शहरों में रहने वाले लोग अपनी दैनिक आवश्यकताओं की चीजों हेतु डिजिटल कॉमर्स के माध्यम से हम अपने खर्च का एक बड़ा हिस्सा व्यय करना शुरू कर चुके है। एक लंबे समय से चली आ रही प्रवृत्ति जिसे कोविड–19 महामारी के कारण तेज हुआ है। जिसके कारण नकदी को काफी हद तक विस्थापित कर डिजिटल भुगतान प्रणाली ने ले लिया है। विशेषज्ञ बताते है कि डिजिटलीकरण की गति बढ़ने के साथ, बैंकों द्वारा दिए जाने वाले खुदरा और एमएसएमई ऋणों का लगभग 50 प्रतिशत अगले दो से तीन वर्षों में डिजिटल ऋण प्लेटफॉर्म पर स्थानांतरित हो जाएगा।

डेटा की उपलब्धता और बैंकों के साथ सहयोग करने वाले कई पारिस्थितिक तंत्र भागीदारों के कारण डिजिटल ऋण आबंटन बैंकिंग परिदृश्य को बड़े पैमाने पर बदल रहा है। ऐसी संभावना है कि खुदरा और एमएसएमई ऋण सेगमेंट के तहत कम से कम 50 प्रतिशत ऋण दो से तीन वर्षों में सोर्सिंग से लेकर प्रलेखन स्तर तक, डिजिटल लैंडिंग प्लेटफॉर्म पर चले जाएंगे। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और मोबाइल एप के माध्यम से ऋण देने सहित डिजिटल ऋण देने की प्रक्रिया तेज होगी।

डिजिटल लैंडिंग प्लेटफार्म से ग्राहकों को लाभ

इसके माध्यम से ग्राहकों को घर बैठे ऋण उपलब्ध होता है परंतु एक कहावत हम सभी जानते है कि जल्दबाजी और शॉट्स–कट के चक्कर में धोखा खाने की संभावना ज्यादा रहती है। डिजिटल माध्यम (पोर्टल/एप्प) ऋण लेने वाले ग्राहकों ने शिकायतों में कहा गया था कि उनसे 36 फीसदी तक ब्याज वसूला जाता है। जुर्माने में भी मोटी रकम वसूली जाती है। ऋण के प्रोसेसिंग शुल्क के तौर पर भी अच्छी खासी रकम काट ली जाती है। साथ ही इस सबके ऊपर 18 फीसदी की दर से जीएसटी भी वसूल किया जाता है।

ऐसा देखने में आया है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म ये नहीं बताते कि वे किस लेंडर के लिए एजेंट के तौर पर काम कर रहे हैं। ऐसे में ग्राहकों को नहीं पता चलता कि शिकायत कहां करें। इस दिशा में भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों और एनबीएफसीओं से कहा है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पर ऋण बांटे या फिर फिजिकल फॉर्म में फेयर प्रैक्टिस कोड और आउट सोर्सिंग नियमों का उल्लंघन नहीं किया जाए। इस बात के मद्देनजर बैंक एवं वित्तीय संस्थाओं को डिजिटल लैंडिंग से जुड़े एप्प और पोर्टल से अपनी साझेदारी का उल्लेख करना जरूरी हो गया है।

डिजिटल लैंडिंग प्लेटफार्म से बैंकों को लाभ

ऋण आबंटन प्रक्रिया का डिजिटलीकरण होने से बैंकों को काफी लाभ मिलेगा। इसके माध्यम से बेहतर निर्णय, बेहतर ग्राहक अनुभव और सबसे महत्वपूर्ण लागत एवं समय में बचत शामिल हैं। वैसे सुदूर क्षेत्र में छोटे एवं मझौले उपभोक्ता एवं व्यवसायी जिन्हें अल्पावधि एवं तत्काल ऋण की आवश्यकता है वैसे ग्राहक को बैंक उच्च ब्याज दर पर ऋण देकर अपना ऋण पोर्टफोलियो भी बढ़ा सकती है साथ ही लाभ भी अर्जित कर सकती है। बैंकों के लिए वैसे तो यह एक जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य है लेकिन समय के साथ इसे हमें स्वीकार करना ही होगा। डिजिटल माध्यम से लैंडिंग में सक्रिय संस्थाओं और उपभोक्ता के संरक्षण हेतु आने वाले समय में काफी बदलाव हमें देखने को मिलेगा। आने वाले समय में इस दिशा में नियामक संस्थाएं ग्राहक एवं वित्तीय संस्थानों के हित को ध्यान में रखने हुए महत्वपूर्ण सुधार लाने वाली है जिससे उपभोक्ता एवं ऋण प्रदाता दोनों लाभान्वित होंगे।

स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय, रोहिणी

बैंक में हिंदी/पंजाबी

अंचल कार्यालय अमृतसर

अंचल कार्यालय बरेली

अंचल कार्यालय बठिंडा

अंचल कार्यालय भोपाल

अंचल कार्यालय दिल्ली-1

अंचल कार्यालय चेन्नई

यदि कहीं कठोर अत्याचार और दुर्व्यहार के बदले में भी स्नेह और प्रेम हो सकता है, तो वह स्त्रियों में हो सकता हैं। – शरतचन्द्र

कार्यशाला का आयोजन

अंचल कार्यालय फरीदकोट

अंचल कार्यालय मुंबई

स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय, रोहिणी

अंचल कार्यालय नोएडा

अंचल कार्यालय लुधियाना

अंचल कार्यालय पटियाला

वी.एस. मिश्रा

मियादी मार्च

मार्च का महीना हमारे देश में बड़ा मायने रखता है। समस्त नागरिक इस मार्च का रोना रोते रहते है। वह भी जिन पर कोई कर नहीं लगता और वह भी जो अभी बेरोजगार है और वह भी जिनका किसी काम–धंधे से सरोकार नहीं है, सब मार्च के भागम–भाग में व्यस्त। आपने किसी से अपना उधार वापस लेना चाहा और भाई ने मार्च का रोना लगा दिया। मार्च की लगाई–बुझाई से तो उधार देने वाला भी त्रस्त है। जो किसी कार्यालय में सेवारत् है वहाँ तो वेतन के लाले पड़ जाते है क्योंकि टीडीएस के लिए उत्तरदायी अधिकारी के लिए अपनी जान बचाने का यही निरापद मार्ग है ताकि फुरसत से गणना करके कर वसूला जाएगा। किबला मार्च का भूत इन सेवारत कर्मचारियों के लिए अप्रैल में भी संकट कारक रहेगा और जैसा वेतन होता है, जैसी महंगाई है, तो मार्च का यह संकट अगस्त तक अपने असर दिखाता रहता है। फिर व्यवस्था देखिए, अप्रैल में ही बच्चों की फीस, कपड़े, किताब का खर्च। मार्च का एक और पक्ष भी है। इसे 'मार्च लूट' कहते है और यह उच्च अधिकारियों, जो दुधारू विभागों में जमे होते है, के पौ–बारह का समय होता है। इस तरह की व्यवस्था को 'बहती गंगा' बताया गया है और यह तो साहित्यिक सत्य है कि **'परम गंग को छाड़ि दुरमति कूप खनावे'** तो दुर्मति होना किसे पसंद होगा?

मार्च का महीना विगत वित्तीय वर्ष के अंत की घोषणा करते हुए प्रारंभ होता है परंतु इसके साथ ही यह महीना अपने साथ कई प्रश्नों को भी लेकर आता है। आम विद्यार्थियों के लिए यह परीक्षा का भूत लेकर आता है और सारे चैन चुरा कर ले जाता है। वैसे तो यह बसंत का महीना कहलाता है, इसके प्रभाव में गर्मी, पावस और शीत के भी अनुभव मिले होते है। सभी वित्तीय कार्यालय, बैंक, बीमा आदि से संबंधित उच्चाधिकारी, शाखा नियंत्रक के लिए पसीने बहाने का समय होता है। पेशानी पर बल, चेहरा बदहवास, बात–बात में खीज का प्रकटन मार्च के आगमन की घोषणा कर देता है। जिन बच्चों को दसवीं, बारहवीं की परीक्षा देनी होती है, उनके लिये मार्च एक सर्द अहसास का अनुभव होता है और एक विशेष वर्ग बड़ा प्रफुल्लित होता है कि **'बुरा ना मानो होली है'** की छाया में उनके मकसद शायद पूरे हो सके।

मजा देखिए कि कोविड जैसी महामारी ने भी हमारे देश में अपने प्रसार के लिए मार्च के महीने को ही चुना। यह अनायास भी नहीं था क्योकि 2020 या 2021 मार्च में कोविड ही जलवा बिखेरने आया। उसे भी पता होगा कि अधिकतम लोगों के लिए यह महीना 'मरण' के लिए ही होता है तो शायद कोविड अपनी नृशंसता के अपराध बोध से कम ग्रस्त होगा। विधान देखिए इस मार्च को जगत में जल्दी पटकने के लिए इसका पूर्ववर्ती महीना अपने आपको छोटा कर लेता है। कुल मिलाकर इस महान महीने का अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, वाणिज्य पर तो प्रभाव होता ही है पर यह सबको व्यस्त, त्रस्त, ध्वस्त करने में भी सक्षम है।

स्त्री का शारीरिक सामर्थ्य भले ही कम हो, उसकी वाणी में असीम सामर्थ्य है। – लक्ष्मीबाई केलकर

मार्च के बखेड़े पर 'चालीसा' अथवा 'पचासा' लिखा जा सकता है परंतु इसका जो आम जनमानस पर प्रभाव होता है, हिम्मत जवाब दे देती है कि कहीं मार्च अपने 'अष्टपद' में कोई नया पद जोड़कर अपनी तीक्ष्णता को नया आयाम न दे दे लेकिन हर चीज का एक उज्ज्वल पक्ष भी होता है और मार्च का भी है। घर में अपनी अनियमित जीवन शैली के लिए गृहिणी के कोप से बचने में मार्च मददगार होता है। दफ़्तर से लौटने में विलंब हुआ, दोस्तों के साथ गपबाजी या फिर नशाबाजी में विलंब हुआ होगा तो भी गृहिणी को यही बताया जायेगा कि मार्च है न, बड़ा प्रेशर रहता है, देरी हो जाती है। कभी किसी महत्वपूर्ण चीज को बाजार से लाने की हिदायत है और महाशय भूल गए तो यह भूलना भी मार्च के मत्थे गया।

एक सज्जन थे, मार्च महीने में संजीदा हो जाते थे पर घर की चहार दीवारी तक, बाहर मस्त। वजह, गृहिणी के ग़ैरज़रूरी इच्छा को ना सुनने के लिए मार्च का रोना बड़ा मुफीद साबित होता था और उधर दफ्तर में मार्च के काम के बहाने अधिक देर रूक कर सहकर्मियों के साथ 'क्वालिटी टाइम' बिताने का अवसर मिल जाता था इसीलिए वह ये चाहते थे कि प्रत्येक महीना मार्च जैसा ही होना चाहिये क्योकि ऐसे पुरूषार्थी मान कर चलते है कि जब वर्ष भर कुछ नहीं उखाड़ा तो आखरी महीने में कौन–सा तीर मार लेंगे। उनके लिए परिश्रम और चिंता के दृष्टिकोण से मार्च महत्वपूर्ण नहीं था। उन्हें तो मार्च के कोलाहल में पत्नी के शोषण का अवसर मिल जाता है। गृहिणी भी इस असत्य को वीरोचित भावना से स्वीकार कर लेती है क्योंकि एक महीने के अपवाद के बाद ग्यारह महीने तो उनकी मुट्ठी में होता है जब ऐसी गलतियों के लिए प्रताड़ित करने का अधिकार सुरक्षित होता है।

एक जीवंत कथा का सहारा लेकर किसी भुक्तभोगी की व्यथा बताता हूँ। बेचारा पान–गुटखे का शौकीन था और दफ्तर से लगे दुकान में खाता चलता था। एक दिन पान वाले ने मार्च का हवाला देते हुए, उधार ना देने की बात कर दी। यह प्राणी इतना आहत हुआ कि संकल्प ले लिया कि ऐसी चीजें न खानी है और न एक अदने पान वाले की सुननी है। आप इस संकल्प की मियाद मार्च तक सीमित मानिए क्योंकि संकल्प में संशोधन करते हुए अगले महीने से बगल वाली दुकान पर खाता खुलवा लिया जाता है और प्रतीक्षा रहती है अगले मार्च तक जब फिर नए संकल्प के लिए मार्च आएगा और अगला दुकानदार माहौल बनाएगा। विद्यालयों में वार्षिक परीक्षा का आयोजन अक्सर मार्च में ही होता है और वार्षिक परीक्षाफल आपकी प्रगति की इबारत लिखता है। यह एक उत्सव की तरह ही होता है क्योंकि अभिभावकों द्वारा किए गए विनियोग की वसूली इसी महीने में होती है। व्यावसायिक संस्थान भी अपनी मेहनत को फलित या अफलित होते हुए इसी महीने के अंत में देखते है और तदनुसार उनका भविष्य भी निर्धारित होता है। तो भाई, मार्च के इस बहुरंगी स्वरूप को यह अकिंचन कहाँ समेट पाएगा पर जिन्दगी के आंकलन के लिए भी वर्ष का कोई भी महीना मार्चवत होना ही चाहिए। आपने विगत वर्ष में अपने लिए, परिवार के लिए, समाज के लिए, देश के लिए कितना कुछ किया होगा पर उसके आंकलन के लिए न तो लेखा गणित की आवश्यकता होती है और न किसी समीक्षक की। आप ही कर्ता होते है और आप ही निर्णायक। संतोष भी आपका, पश्चाताप भी आपका। ईश्वर ने इस तरह के सुधारों के लिए कोई विशेष 'मार्च' नहीं बताया है। यह व्यक्ति विशेष को ही तय करना होगा।

मार्च की अनेक विशेषता में एक यह भी है कि सामान्यतः होली इसी महीने में पड़ता है और होली का अर्थ है उत्साहपूर्ण माहौल। चाहे कितनी विवशता हो, कैसी भी तकलीफ हो होली जरूर मनाया जाएगा और यही वह दिन होता है जब आप सब कुछ भूल कर जीवन में उत्सव, उत्साह का लुत्फ उठाते है। यह ईश्वरीय विधान ही है कि इस संगदिल महीने में होली का यह त्यौहार आशा का संचार करता है, पुरूषार्थ का आह्वान करता है ताकि मार्च से लोहा लिया जा सके। सबसे बड़ी बात है कि चाहे जैसा भी बीते, मार्च का आखरी दिन चाहे जितना भी उथल–पुथल भरा हो, इसकी परिणति एक–दूसरे को बधाई देकर ही होती है। ठीक सुखान्त कहानियों की तरह। जितने भी उतार–चढ़ाव रहे हो, अंत सर्वदा सबके लिए सुखद होता है।

यह साफ नहीं है कि मार्च या इसका शक समानार्थी फाल्गुन या चैत्र जो भी महीना होता हो को इतनी विशालता कब और किसने प्रदान की। चूंकि भारत में सभी परंपरा या फिर इस तरह की परंपरा को शुरू करने के लिए अंग्रेज ही उत्तरदायी थे तो इस बवाल की पृष्ठभूमि में भी अंग्रेजों की ही भूमिका रही होगी और हमारी विडंबना है कि जो अंग्रेज टिका गए, उसको समाप्त कैसे करें? कहीं यह दकियानूसी तो नहीं मान ली जाएगी। अब हर महीने की तरह मार्च महीने का भी अंत आता है और इसकी समाप्ति के साथ ही इसकी आहूति में भाग लेने वाला हर वीर मान लेता है कि उसका योगदान श्रेष्ठ रहा है। आत्म–मुग्धता के इसी माहौल में नववर्ष के आरंभ से ही पिछली गलतियों को भुलाकर नए लक्ष्य बना लिए जाते है या फिर थोप दिए जाते है ताकि फिर प्रयाण हो सके आगामी मार्च तक।

सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक

प्रधान कार्यालय में

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2022

अमित मोहन अस्थाना

मैसूर यात्रा

बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा 7 मार्च 2022 को उक्त विषय पर मैसूर में अखिल भारतीय सेमीनार का आयोजन किया गया। मैसूर दक्षिण भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में भी जाना जाता है। मैसूर का नाम दो शब्दों की संधि से बना है, मेस+उरु। उरु का अर्थ है गाँव और मेस शब्द महिसासुर से निकला है, मैसूर का अर्थ हुआ महिससुर का गाँव। अतः मैसूर भारत वर्ष में ऐतिहासिक नगर है। इस नगर में प्रस्तुति का अवसर बहुत ही सुखद रहा।

बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा पंजाब एण्ड सिंध बैंक, एसटीसी दिल्ली से भेजी गई प्रविष्टि को भी चयनीत किया गया व इसकी प्रस्तुति के लिए एसटीसी से मुझे सहभागिता का अवसर मिला। सेमीनार में रिजर्व बैंक, पुलिस व मंत्रालय से भी उच्च अधिकारियों द्वारा सहभागिता की गई व विचार रखे गए। अखिल भारतीय स्तर के विभिन्न बैंकों से आए वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे। मुख्यता विचारों में निम्नलिखित बिन्दु ही प्रधान रहेः

सभी वक्ताओं ने माना कि वर्तमान समय जो संचार क्रांति का दौर है व आज विश्व का शायद ही कोई इंसान होगा जिनका इस साइबर स्पेस कोई अपनी पहचान नहीं होगी। किसी न किसी तरीके से आज हम सभी इस साइबर वर्ल्ड का हिस्सा बन चुके है व हमारी व्यक्तिगत, आर्थिक, गोपनीय जानकारी साइबर स्पेस में किसी न किसी रूप में है। इसलिए साइबर स्पेस में हमें फूंक–फूंककर कदम रखने की जरूरत है।

साइबर दुनिया आभासी हो सकती है पर इसमे होने वाला नुकसान आभासी नहीं है। यह भी माना गया कि साइबर सुरक्षा के तकनीकी व मनोवैज्ञानिक पहलू पर ध्यान देने की आवश्यकता है। साइबर स्पेस में उपस्थिति एक कला और विज्ञान दोनों है। तकनीक का प्रयोग विज्ञान और व जानकारी पर नियंत्रण एक कला है। 'मनुष्य' किसी भी सुरक्षा प्रणाली की सबसे कमजोर कड़ी होने के कारण जानकारी का प्रवेश द्वार बनाता है। फिशिंग साइबर हमलों के लिए एक प्रयुक्त लोकप्रिय टूल है।

फिशिंग अटैकः फिशिंग एक साइबर अपराध है जो वैध दिखने वाले ईमेल, कॉल या टेक्स्ट संदेशों का उपयोग करता है। उपभोक्ताओं को अपना व्यक्तिगत डेटा प्रदान करने के लिए मूर्ख बनाने की उम्मीद में कॉन कलाकार वैध वेबसाइटों की जानकारी का उपयोग करके पृष्ठों को फिर से बनाते हैं।

फिशिंग के कुछ रूप 'विशिंग' (वॉयस फिशिंग), 'स्मिशिंग' (एसएमएस फिशिंग) हैं, और साइबर अपराधी लगातार कई नई तकनीकों के साथ आते हैं। स्पीयर फिशिंग अटैक लक्ष्य पर शोध के बाद किया जाता है और इसमें एक विशिष्ट व्यक्तिगत घटक होता है जिसे लक्ष्य को अपने हित के विरुद्ध कुछ करने के लिए डिजाइन किया जाता है। गोपनीय कॉर्पोरेट डेटा को कैप्चर करने में इस तंत्र का उपयोग किया जाता है।

फिशिंग से बचावः वेबसाइट का उपयोग करने से पहले पूरे यूआरएल को पैडलॉक चेक के साथ जांचना सबसे अच्छा अभ्यास है। हमेशा सुनिश्चित करें कि, आप वास्तविक डोमेन नाम के साथ

नारी की सहनशीलता की कोई उपमा नहीं। संसार में ऐसा कौन सा दुःख है, दर्द है जिसे नारी न सह सके। – रामधारी सिंह दिनकर

वास्तविक यूआरएल का उपयोग कर रहे हैं। हमेशा, क्लिक करने से पहले सोचें: यादृच्छिक ईमेल या संदेशों में दिखाई देने वाले लिंक पर क्लिक करना एक अच्छा कदम नहीं है। यदि आपको किसी मेल या लिंक की प्रामाणिकता पर संदेह करते हैं, तो उनकी जांच अवश्य करें। वित्तीय जानकारी ऑनलाइन प्रदान करने के बारे में हमेशा सतर्क और थोड़ा सतर्क रहें।

अपने ऑनलाइन खातों को नियमित रूप से सत्यापित करें: नियमित रूप से अपने ऑनलाइन खातों पर जाने की आदत डालें। अपने वित्तीय खातों के मासिक विवरणों की नियमित रूप से जाँच करने से बैंक फिशिंग और क्रेडिट कार्ड फिशिंग घोटालों को रोकने में मदद मिल सकती है। यह भी सुनिश्चित करता है कि आपकी जानकारी के बिना कोई भी धोखाधड़ी लेनदेन नहीं किया गया है। पासवर्ड स्वच्छता के अच्छे स्तर को बनाए रखे। एक से अधिक खातों के लिए एक ही पासवर्ड का उपयोग न करें, विशेष रूप से वित्तीय खातों के लिए। घर या स्थान या पालतू जानवर या कंपनी का नाम, फोन या वाहन नंबर, ऐसे पासवर्ड का आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है। मजबूत पासवर्ड का प्रयोग करें जो अंकों, अपरकेस, लोअरकेस, विशेष वर्णों का एक संयोजन है। पासवर्ड की लंबाई 8–25 वर्णों तक का समर्थन करते हैं। वर्णों की संख्या जितनी अधिक होगी, पासवर्ड का अनुमान लगाना उतना ही कठिन होगा। शब्दकोश में किसी शब्द के प्रयोग से बचें। एप्लिकेशन द्वारा प्रदान किए गए डिफॉल्ट पासवर्ड का उपयोग करने से बचें। पहले लॉगिन के बाद बदलें। अपना पासवर्ड नियमित रूप से बदलें, जैसे हर 30–45 दिनों में।

नकली वेबसाइट व कपटपूर्ण चैरिटी

नकली वेबसाइट और एप्लिकेशन जो कोविड–19 संबंधित जानकारी साझा करने का दावा करते हैं, वास्तव में मैलवेयर इंस्टॉल करेंगे, आपकी व्यक्तिगत जानकारी चुराएंगे, या अन्य नुकसान पहुंचाएंगे साथ ही फर्जी या गैर–मौजूद धर्मार्थ संगठनों के लिए दान मांगने वाली वेबसाइटों में तेजी आई है। नकली चैरिटी और डोनेशन वेबसाइट किसी की नेक इच्छा का फायदा उठाने की कोशिश करेंगी।

नीचे दी गई सावधानियों को अपनाकर, आप इन खतरों से बेहतर तरीके से अपनी रक्षा कर सकते हैं:

1. अवांछित या असामान्य ईमेल, टेक्स्ट संदेश और सोशल मीडिया पोस्ट में लिंक और अटैचमेंट पर क्लिक करने से बचें।
2. महामारी की स्थिति से संबंधित सटीक और तथ्य–आधारित

जानकारी के लिए केवल विश्वसनीय स्रोतों, जैसे सरकारी वेबसाइटों का उपयोग करें।

3. कभी भी फोन या ईमेल पर अपनी व्यक्तिगत जानकारी, बैंकिंग जानकारी या अन्य व्यक्तिगत रूप से पहचान योग्य जानकारी सहित न दें।
4. दान करने से पहले हमेशा किसी चौरिटी की प्रामाणिकता की पुष्टि करें।
5. अविश्वसनीय/अज्ञात स्रोतों से एप्लिकेशन डाउनलोड या इंस्टॉल करने से बचें।
6. एकाधिक खातों के लिए एक ही पासवर्ड का उपयोग करने से बचें।
7. सार्वजनिक वाईफाई का उपयोग करते समय कोई वित्तीय विवरण दर्ज न करें।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक की प्रस्तुति में उक्त बिन्दुओं के साथ यह भी बताया गया कि सभी बैंक वर्तमान में रणनीतिक स्तर पर उच्च तकनीक का उपयोग कर रहे है परंतु मनोवैज्ञानिक स्तर पर कुछ बिन्दुओ को समझ जाना भी आवश्यक है। जैसे अगली पीढ़ी को वित्त साक्षरता के साथ तकनीकी साक्षरता की भी जरूरत है जो साइबर अपराधों की रोकथाम में मदद करेगी। इसके साथ–साथ हमें वित्तीय साक्षारता पर जोर देते हुए हमें साइबर धोखाधड़ी से बचाव हेतु एक सशक्त पीढ़ी तैयार करने की जरूरत है। बैंक कार्यान्वयन स्तर पर अनुपालन का प्रसार व ग्राहक स्तर पर जागरूकता को सुनिश्चित करना होगा।

तकनीक के विकास के साथ–साथ उसके दुष्परिणाम भी होंगें परंतु इसके लिए हम तकनीकी विकास को अस्वीकार नहीं कर सकते है। तकनीकी विकास आज की सच्चाई है हमें इसके साथ जीवन जीने की आदत बनानी होगी व अपनी क्षमता और वित्तीय साक्षरता को भी साथ ही साथ बढ़ाना होगा।

एसटीसी रोहिणी, दिल्ली

डॉ. कौशलेन्द्र कुमार

चलो, अब लौट चले!

"पापा और कितना चलना है?–" प्रमोद के सात साल के बेटे राहुल ने अपने पापा से पूछा। प्रमोद को दिल्ली से चले आज तीन दिन हो चुके थे। प्रधानमंत्री के द्वारा लॉकडाउन लगाए जाने के बाद हजारों–लाखों लोग एक अजनबी शहर में रहने से बेहतर अपने गाँव लौट जाना चाहते थे। प्रमोद भी उनमें से एक था। अपनी पत्नी नीमा और एक बच्चे के साथ पैदल ही निकल पड़ा। आज तीन दिन हो चुके थे। कहीं कोई आटो मिल गई तो कहीं कोई प्राइवेट बस। जब कुछ न मिला तब घंटो पैदल ही चलना पड़ा। रास्ते में लोगें का हुजूम भी उनके साथ चल रहा था। सब एक दूसरे का ख्याल भी रख रहे थे। कभी किसी शहर में किसी के रिस्तेदार का घर आ जाता तो कुछ खाने का इंतजाम हो जाता। परिस्थितियां तो विपरीत थी परंतु हौसले से कोई भी कमजोर न था। अपने घर वापस जाने और सही सलामत पहुचने की जिद में सैकड़ों किलोमीटर की दूरियां भी कदमों से ही नापी जा रही थी।

प्रमोद हर बार अपने बच्चे को यही बोल कर चुप कराता कि थोड़े दूर और चल लो फिर तो घर आ जाएगा। वहां चुन्नु और गुड्डु तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। राहुल जब चुन्नु और गुड्डु के नाम सुनता तो खुश हो जाता और फिर चलने लगता। ये दोनों राहुल के चचेरे भाई थे। तीन साल पहले जब राहुल छठ पूजा में गाँव आया था तो अपने भाइयों के साथ खूब खेला था। चाची के हाथ का खाना बहुत स्वादिष्ट लगा था। चाचा के कंधों पर खेत खलिहान घूमा था। प्रमोद भी अपने भाई–भाभी भतीजे से मिलने को लेकर प्रसन्न था। रास्ते में आ रही परेशानी घर जाने की खुशी से कम हो रही थी। तीन साल पहले जब वह गाँव गया था तब सिर्फ 6 दिनों तक ही घर पर रहा था और वापस आते वक्त आंखों में आंसू थे। भैया–भाभी भी दुखी थे। प्रमोद को रह रहकर वही दृश्य याद आ रहे थे जब गाँव से वापसी के वक्त बस स्टैंड तक पूरा गाँव उसे छोड़ने आया था। समय तो तब से बहुत बीत चुका था लेकिन प्रमोद का मन आज तक उसी बस स्टैंड पर कहीं रुका हुआ था। उसे लग रहा था कि आज फिर सब लोग उसका इंतजार उसी बस स्टैंड पर कर रहे होंगे। उसे लग रहा था कि जब वो गाँव पहुचेगा तब पूरा गाँव उसे पलकों पर उठा लेगा। लेकिन नीमा...? नीमा प्रमोद के उत्साह में खलल नहीं डालना चाह रही थी परंतु भविष्य के प्रति बहुत उत्साही नहीं थी। शहर की तो वे अभी नई–नई ही हुई थी। पूरा बचपन और शादी के बाद के भी 4 साल उसका ग्रामीण परिवेश में ही बीता था। शहर के अविश्वासी माहौल ने उसे सतर्क रहना सीखलाया दिया था। वो जानती कि हर बार गाँव आने और इस बार गाँव आने में फर्क था। हर बार तो वापसी की टिकट लेकर ही वो गाँव आती थी, लेकिन इस बार.....! ऐसे ही ख्यालों में डूबते–उतरते और तीन दिन का सफर बीत गया। सुबह–सुबह तीनों अपने गाँव की दहलीज पर कदम रख रहे थे।

नारी शाँति की प्रतिमा हैं, इसे उच्च पद से नीचे गिराना केवल जंगलीपन है। - रफ़ोडियस

उसके गाँव में आने से पहले ही, गाँव में उसके दिल्ली से आने की खबर पहुंच चुकी थी। कोरोना का खौफ ऐसा कि जो लोग भी उसे देखते, एक बार तो ठहरी निगाहों से देखते और ऐसे भाव दिखलाते कि क्यों आ गए? प्रमोद जब किसी को देखकर राहुल से परिचय करवाता तब वो दूर से ही दुआ सलाम कर चला जाता। खैर, इस तरह से आधा किलोमीटर चलने के बाद प्रमोद का घर आ गया। राहुल घर को देखकर पहचान गया और शोर करते हुए दौड़ कर भीतर चला गया। इतने में प्रमोद के भैया–भाभी बच्चे भी बाहर आ गए। शुरु में थोडी हिचकिहाट के बाद माहौल पहले की ही तरह होने लगा। भैया–भाभी का व्यवहार उसी तरह था जैसा प्रमोद ने सोच रखा था। बच्चे घुल मिल कर खेलने लगे, प्रमोद गाँव के लोगों के साथ उठने बैठने लगा। शहर की बात अक्सर ही गावों में खूब चाव के साथ सुनी जाती है और फिर दिल्ली–मुंबई की बात हो तो क्या कहने। प्रमोद भी दिल्ली के अपने रहन सहन, कारखाने, बाजार, राजनीति और भी कई प्रकार की बातों को सबके साथ करने लगा। तीन साल के बाद प्रमोद गाँव आया था। इन तीन सालों में गाँव में तरक्की भी हुई थी। लोगों के हाथ में स्मार्ट फोन आ गए थे। नौजवान अब अपने–अपने फोन में ही ज्यादा व्यस्त रहते थे, पहले की तरह मेल जोल अब नहीं दिख रहा था। परंतु बुजुर्ग अब भी पहले जैसे ही थे। प्रमोद भी अब गाँव की हर बात में सम्मिलित होने लगा था।

प्रमोद अपने बड़े भाई के साथ बड़े अदब से पेश आता था। बचपन इन दोनों भाइयों का बड़ा चुनौतीपूर्ण रहा। प्रमोद जब छः साल का था तब एक गंभीर बीमारी ने माँ को छिन लिया था। पिताजी ने जब आखिरी सांस ली थी तो प्रमोद हाई स्कूल भी नहीं गया था। तब से बड़े भाई ही प्रमोद के लिए सबकुछ थे। गाँव आने के बाद से प्रमोद का ज्यादातर समय अपने भाई के साथ ही व्यतीत हो रहा था। बाहर जाना, खेत घुमना, खाना सब साथ ही होता था। गाँव में भी दोनों भाइयों की जोड़ी खूब पसंद की जा रही थी। नीमा कई दिनों से सोच रही थी कि खेत–खलिहान संबंधी भी कुछ बात हो तो

पता चले कि हमारा भी गुजर–बसर यहां हो सकेगा या नहीं। एक दो बार उसने अपने जेठानी से बात करने की कोशिश भी की तो ऐसा प्रतीत हुआ कि वो ज्यादा कुछ बताना नहीं चाह रही थी। नीमा को कई बार लगा कि प्रमोद को बोले कि खेत–खलिहान–उपज आदि की बात बड़े भाई के साथ करें लेकिन दोनों भाइयों का प्रेम देखकर वो चुप हो जाती। धीरे–धीरे समय बीतने लगा। दिनों के बाद सप्ताह भी बीतने लगे। देखते–देखते एक महीना बीत गया।

इधर नीमा ने कई बार महसूस किया कि प्रमोद के भाई कोरोना के प्रकोप के कम हो जाने की बात करने लगे थे, खासकर दिल्ली को लेकर। वो कई बार कह चुके थे कि अब तो सब लोग वापस भी लौटने लगे हैं, कितने दिनों तक भला कोई अपना काम छोड़ कर आराम कर सकता है! कल–कारखाने भी अब खुल चुके हैं। नीमा को ये बातें चुभ जाती। ऐसा नहीं है कि प्रमोद को ये सब नहीं समझ में आ रहा था लेकिन उसे लगा कि भैया उसकी चिंता करते हैं इसलिए उसे काम करने को कह रहे हैं। वर्षों पहले दिल्ली भी तो काम करने के लिए उन्हीं की प्रेरणा से गया था लेकिन प्रमोद ने अभी तक अपने भाई को यह नहीं बताया था वो इस बार वो पूरे परिवार के साथ कभी नहीं वापस लौटने के लिए गाँव आया है। घर पर भी माहौल कुछ बदलने सा लगा था। नीमा की जेठानी भी अब पहले की तरह व्यवहार नहीं दिखा रही थी। राहुल से तो उसने बात भी करनी बंद कर थी। नीमा के कई बार प्रेमपूर्वक बोलने के बाद भी वो ठीक से जवाब नहीं दे रही थी। कई बार तो वो नीमा पर झल्ला भी चुकी थी। नीमा ने कई बार देखा था कि प्रमोद के बड़े भाई और भाभी आपसे में कुछ कानाफुसी करते और उसके जाते ही चुप हो जाते।

इधर, धान रोपन का समय भी आ चुका था लेकिन प्रमोद के भैया अभी तक खेतों को सूना ही रख छोड़े थे। मानों वो किसी बात का इंतजार कर रहे हों। प्रमोद न जाने कितने सालों के बाद धान रोपन के वक्त गाँव में था। पहले की बात याद कर कर के वो रोमाँचित हो रहा था। वो छोटा था परंतु धान बोने से लेकर धान की फसल काटने तक भैया के साथ ही रहता था। पूरे गाँव में एक उत्सव का माहौल होता था। प्रमोद इस बार भी वैसा ही कुछ

होने की सोच रहा था परंतु इस बार अब तक प्रमोद के भैया ने न तो खेत में काम ही शुरु किया था और नहीं प्रमोद से ही कुछ करने के लिए कहा था। अब जैसे–जैसे समय बीतने लगा प्रमोद के घर में एक अनदेखा–सा, अनजाना–सा तनाव शाम के अंधरे की तरह गहन होते चला था। प्रमोद के भैया अब ज्यादातर चुप ही रहते थे। प्रमोद की बातचीत अपने भैया–भाभी के साथ अब नहीं के बराबर ही होती थी। प्रमोद को भैया–भाभी की चुप्पी अब खलने लगी थी। शुरु में उसे लगा कि शायद भैया–भाभी के बीच कुछ अनबन हुई होगी, इसलिए वो लोग थोड़े परेशान हैं। परंतु एक दिन...। वो सुबह–सुबह सैर करने निकला तो पास के महतो ने ने पूछा–क्यों भाई! इतनी भी क्या जल्दी है दिल्ली जाने के लिए? अभी तो हालत इतने भी ठीक नहीं हुए हैं वहां पर। यह सुनकर प्रमोद हतप्रभ रह गया। उसने कहा– "मैं कहां जा रहा हूँ।" तुम्हारे भैया कह रहे थे कि तुम दिल्ली वापस जाने के लिए ज़िद कर रहे हो। प्रमोद को कुछ समझ नहीं आया, लेकिन यहां ज्यादा कुछ बोलना उचित नहीं समझा। अभी दो–चार कदम ही बढ़ा था कि एक और ने पूछ लिया– काहे

हो प्रमोद! तनिक और दिन रुक जाओं। तुम्हारे भैया कह रहे थे कि तुम वापस जाने के लिए परेशान हो रहे हो। इतने दिन पर तो गाँव आए हो, तनिक भैया–भाभी के साथ भी रह लो। काम–धंधा तो चलता रहेगा। प्रमोद को बात अब समझ में आने लगी थी। उसके भैया घर के भीतर उसे वापस जाने का दबाव बना रहे थे और घर के बाहर गाँव में ऐसा माहौल तैयार कर रहे थे कि प्रमोद के वापस लौटने को लोग प्रमोद की ही इच्छा मानें।

प्रमोद अब और आगे नहीं बढ़ना चाहता था। सुबह की सैर की ताजी हवा उसे बोझिल लग रही थी। कहां वो सोच रहा था कि इस बार भी वो भैया के साथ खेत–खलिहान में काम करेगा और इधर भैया उसे वापस दिल्ली भेजने की योजना बना रहे थे। बचपन के भाइयों के बीच की वो आत्मीयता आज के स्वार्थ की तपीश में कब की राख हो चुकी थी, बस प्रमोद को पता नहीं था। प्रेम जिस आतुरता और विश्वास के साथ वो गाँव वापस आया था, वो इतनी जल्द मंद पड़ जाएगा उसने सोचा न था। उसे लग रहा था कि नीमा को ये सब बात वो कैसे बताए। लेकिन नीमा बेहद सुलझी हुई महिला थी। उसे पता था कि प्रमोद को भी जल्द ही घर के वास्तविक हालात से सामना हो जाएगा और उसे दिख भी रहा था कि प्रमोद को अब समझ में आने भी लगा है। उसने प्रमोद की मनःस्थिति को भांपते हुए एक दिन मौका देखकर प्रमोद से कहा– "कल खबर आ रही थी कि हालात अब सुधरने लगे हैं और सभी कल–कारखाने भी सुधरने लगे हैं। गाँव में हम लोगों के करने के लिए भी कुछ नहीं है। राहुल की पढ़ाई भी यहां ठीक से नहीं हो पाएगी। हम क्यों न फिर से वापस चलें?'' प्रमोद पत्नी की बात सुनकर चौंक गया। वो जानता था कि नीमा उसे बहुत अच्छी तरह से जानती है। नीमा अगर ऐसा बोल रही है कि तो उसकी चिंता वाजिब है। फिर भी वो एक क्षण रुककर नीमा से पूछता है–"कुछ हुआ है क्या?'' प्रमोद को नीमा की एक बात अच्छे से पता थी कि नीमा जब कुछ बात छिपाकर बोलती थी तो वो प्रमोद को देखे बिना ही बोलती थी। प्रमोद ने नीमा की तरफ देखा। जवाब में नीमा ने आखें बंदकर कहा– नहीं, होगा क्या! इस कोरोना महामारी में हमें अपनों का साथ मिला, भैया–भाभी का साथ मिला, राहुल भी गाँव को देख सका। अब हम अपने घर को लौट चले तो अच्छा ही होगा। प्रमोद समझ गया था कि जिस सपने को लेकर वो दिल्ली से पैदल ही चल पड़ा वो सच में सपना ही था क्योंकि यहां गाँव–घर की हकीकत तो कुछ और ही थी। प्रमोद सुबह चार बजे का अलार्म लगाकर सोने की कोशिश कर रहा था परंतु अपनों के लगाव की ही तरह नींद भी कहीं दूर जा चुकी थी।

अंचल कार्यालय दिल्ली–1

ग्राहक के मुख से

दयाराम पूनियाँ

वर्तमान युग मे बिना बैंकिंग के जीवन की कल्पना तक संभव नहीं हैं। बैंकिंग हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका हैं। वैसे तो बैंकिंग बहुत पुराने समय से ही हमारे जीवन में आ चुकी थी किन्तु इस समय में बैंकिंग क्षेत्र में कई नए आयाम स्थापित हो चुके हैं। बैंकिंग क्षेत्र में बढ़ते तकनीकी प्रयोग की वजह से आम लोगों को बैंकों में जाने की जरूरत ही नहीं पड़ती हैं, सभी काम ऑनलाईन हो जाते हैं। एक वक्त था जब बैंक भी एक–दो ही हुआ करती थी और ग्राहक भी सीमित हुआ करते थे । उस दौर में लोग बैंक से भावनात्मक रूप से अपना जुड़ाव महसूस करते थे। कुछ ऐसा ही मेरे साथ हुआ।

मेरे व्यक्तिगत अनुभव के अनुसार ग्राहक सेवा की दृष्टि से पंजाब एण्ड सिंध बैंक, सेवा में देश का अग्रणी बैंक हैं। बैंक के प्रबंधन व कर्मचारियों द्वारा ग्राहकों की समस्याओं को गहराई से समझना और उनका निवारण करने का ही परिणाम है कि आज पूरे भारत वर्ष में पंजाब एण्ड सिंध बैंक की शाखाएं अपनी ग्राहक सेवा के लिए प्रसिद्ध हैं। मैने वर्ष 1999 में अपनी कंपनियां मेसर्स पूनिया वाइंस, उज्ज्वल ग्रेनाईटस प्रा. लि., एसोसिएट्स बिल्डहोम प्रा. लि., श्री बालाजी बिल्डर्स एण्ड डवलपर्स के खाते पंजाब एण्ड सिंध बैंक की राजापार्क शाखा जयपुर में खुलवाएं और उसके बाद शाखा में आना–जाना हमेशा लगा ही रहता था। बैंक के तत्कालीन शाखा प्रबंधक श्री राकेश खुराना व स्टाफ सदस्यों के साथ रिश्ते भी मधुर स्थापित हुए जो आज तक शाखा के प्रत्येक कार्मिकों के साथ निभता चला आ रहा है। समय के साथ–साथ हमारा व्यवसाय भी गति पकड़ने लगा फिर हमनें बैंक से कई तरह के ऋण लिए, बैंक गारंटीया बनवायी, आज बैंक की सेवा लेते हुए 22 वर्ष पूरे होने हैं लेकिन इन वर्षों में बैंक ने हमें किसी भी प्रकार की शिकायत का मौका नहीं दिया। बैंक की सेवाएं काबिले तारीफ हैं, ग्राहक सेवा को प्राथमिकता देने के कारण आज पंजाब एण्ड सिंध बैंक अपनी कसौटी पर पूरी तरह खरा उतरा हैं। ग्राहकों की हर समस्या का समाधान यहाँ शाखा स्तर पर ही हो जाता हैं। हम बैंक की सेवाओं के कायल है।

वर्तमान अंचल प्रबंधक श्री सुनील गेरा जी से भी मेरी मुलाकात हुई है। वो बहुत ही प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी इंसान हैं उनके मार्गदर्शन में बैंक का जयपुर अंचल व्यापार के नए आयाम स्थापित कर रहा हैं।

अभी कुछ दिन पहले ही मुझे ऋण की जरूरत थी कई बैंक ऑफर भी दे रहे थे लेकिन मन पंजाब एण्ड सिंध बैंक से ही लेने का था। बस फिर क्या था शाखा प्रबंधक महोदय को कहने की देर थी और मेरा ऋण प्रपोजल अंचल कार्यालय भिजवा दिया। अंचल प्रबंधक महोदय ने भी तय वक्त पर सेंक्शन भिजवा कर अपनी व बैंक की "जहाँ सेवा ही जीवन ध्येय है" पंक्तियों को चरितार्थ कर दिखाया। मैं बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

निदेशक
पूनियाँ वाइंस

काव्य–मंजूषा

गजलें

डॉ. चरनजीत सिंह

संग सुमन के शूल नहीं है
यह मौसम अनुकूल नहीं है।

तुमको अपना मान रहा हूँ
क्या यह मेरी भूल नहीं है।

पुरखों की यादें बाकी हैं
उन चरणों की धूल नहीं है।

पुत्र से बढ़कर पौत्र है प्यारा
सूद से प्यारा मूल नहीं है।

नदिया 'सागर' से यूँ बोली
मेरा भी अब कूल नहीं है।।

मत जग का आकर्षण देख
अपने मन का दर्पण देख।

मन तो ये भी कहता है
राम को तज कर रावण देख।

चाहे बरस नहीं पाया
तू बादल का घर्षण देख।

दे डाला सर्वस्व तुझे
हमने किया समर्पण देख।

मेरी बात पे यूँ बोले
जा, घर जाकर दर्पण देख।।

समय बदलता जाता था
मुझको छलता जाता था।

रेत झरे, यूँ मुट्ठी से
समय निकलता जाता था।

वह यौवन धीरे–धीरे
चाँद–सा ढलता जाता था।

बर्फ कहीं पिघले जैसे
हृदय पिघलता जाता था।

वो आएँ आसार न थे
वक्त भी टलता जाता था।।

क्षण भर को उल्लास न आया
जीवन हमको रास न आया।

सुख की परिभाषा है इतनी
उपवन में मधुमास न आया।

दूर से देखा, लौट गया सुख
पल भर को भी पास न आया।

और तो सब कुछ सीखा हमने
बस करना उपहास न आया।

जिसने दुनिया राम की मानी
फिर वो तुलसीदास न आया।।

सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

नारी तो माँ, बहन और बेटी का प्रतिरूप है। – मैथिलीशरण गुप्त

रीना आर्या

सशक्त स्त्री

पुरुषों के किसी भी रूप के प्रेम के लिए रोती स्त्री,
तिरस्कृत, उत्पीड़ित और आँसुओं में अपनी दुनिया डुबोती स्त्री
इस दृश्य में अब बदलाव लाना होगा,
पुरुष को अपने अनुरूप चाहने की अभिलाषा में सुधार लाना होगा,

यदि वो हमारे अनुकूल नहीं ढलना चाहते तो ये जिद की ही क्यों जाए,
जो पूरी नहीं कर सकते उनके आगे कोई आस धरी ही क्यों जाए,
क्यों हम खुद से खुद को सराह नहीं सकते,
क्यों खुद ही खुद को चाह नहीं सकते,

क्यों हम खुद में सक्षम, सशक्त हैं, मान नहीं सकते,
क्यों हम सब करने में समर्थ हैं जान नहीं सकते,
क्यों दूसरों से तस्दीक चाहिए अपने ही हुनर की हमें,
क्यों हम खुद को सम्पूर्ण मान नहीं सकते,

जब तक दूसरों की ओर देखते रहेंगे दयनीय बनकर,
बस तब तक ही हम उनके आश्रित हैं,
जिस दिन उठ खड़े होंगे, हम ही सर्वस्व हैं,
जिस दिन खुद पर विश्वास कर लेंगे,
जिस दिन अपनी शक्ति का आभास कर लेंगे हम,
हाँ, हम स्त्रियाँ, पुरुषों से पूर्णतया आजाद हैं,
हम खुद हमारा आने वाला कल, हम खुद ही हमारा आज हैं,

नहीं चाहिए उनकी दया में डूबी प्रशंसा,
नहीं चाहिए किसी काम के लिए उनकी अनुशंसा,
नहीं चाहिए उनका देह तक सीमित प्रेम,
नहीं माँगते हम वो नित पूछें हमारा कुशलक्षेम,

सुनो आप सब, यदि मैं लायक हूँ तो खुद ही ये सब हासिल है,
यदि नहीं तो दुःखी नहीं हूँ मैं, चल रही हूँ अनवरत रुकी नहीं हूँ मैं,
मैं खुद को काबिल करूँगी, अपने दम पर सब हासिल करूँगी,
इस तरह भिक्षा में मिला प्रेम या प्रशंसा, नहीं स्वीकार है मुझ स्त्री को...

प्रधान कार्यालय सूचना प्रौद्योगिकी विभाग

अनुज कुमार सिसोदिया

भावनायें

कैसी है ये भावनाये जिसे चाहिए उसे बदल जाये
इसलिए भावनाओं को समझो अपने आप को समझो

कभी हसती है ये भावनाये तो कभी रुलाती है ये भावनायें
इसलिए अपनी खुशी के साथ दूसरे का दुःख भी समझो

प्यार बढ़ाती है ये भावनाये अपनेपन का एहसास दिलाती है ये भावनायें
इसलिए नजदीकियां बढ़ाने के साथ उसकी बारीकियों को समझो

सपने दिखती है ये भावनाये फिर उन्हें तुड़वाती है ये भावनायें
इसलिए सपना सच कैसे बनाया जाए उस तरीके को समझो

कभी उम्मीदों का महल तो कभी जगह–जगह की खाक दिखवाती है भावनायें
इसलिए असली दुनिया की पहचान और उनके रंग रूप को समझो

कभी सही तो कभी गलत काम कराती है भावनायें
इसलिए अच्छे बुरे के फर्क को समझों

रेलवे रोड, गाज़ियाबाद शाखा

मीनाक्षी मुटरेजा

मेरे सपनों का हिंदुस्तान

सोचती हूँ, कैसा मेरा हिंदुस्तान हो?
कैसा इसका अस्तित्व, कैसी पहचान हो?

चैन और सुकून रहे यहाँ हमेशा,
आतंक का ना नामोनिशान हो।

सुरक्षित रहें बहन बेटियाँ हमारी,
दहेज नाम पर कोई ना कुर्बान हो।

सुसंस्कृत, शिक्षित हो आज का युवा,
इसके हर प्रयास से, देश का सम्मान हो।

कोई क्या बिगड़ेगा उस देश का
जिस देश का खुदा निगहबान हो।

शाखा
सिद्धार्थ एनक्लेव,
दिल्ली

नैन्सी प्रसाद

मेरे प्रिय कवि "निराला"

हिंदी कविता के छायावादी युग के चार स्तंभो में से एक माने जाते हैं। वे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के साथ हिंदी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उन्होनें कई कहानियां, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं किन्तु उनकी ख्याति विशेष रूप से कविता के कारण ही है। इनका जन्म बंगाल की महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में हुआ था। उनके पिता पंडित रामसहाय तिवारी उन्नाव के रहने वाले थे और महिषादल में सिपाही की नौकरी करते थें। निराला की शिक्षा हाई स्कूल तक हुई। बाद में हिंदी और बांग्ला का स्वतंत्र अध्ययन किया। पिता की छोटी–सी नौकरी की असुविधाओं और मान–अपमान का परिचय निराला को आरंभ में ही प्राप्त हुआ। उन्होंने दलित–शोषित किसान के साथ हमदर्दी का संस्कार अपने अबोध मन से ही अर्जित किया। तीन वर्ष की अवस्था में माता का और बीस वर्ष की अवस्था में पिता का देहांत हो गया। अपने बच्चों को अलावा संयुक्त परिवार का बोझ इन पर पड़ा। पहले महायुद्ध के बाद जो महामारी फैली उसमें न सिर्फ पत्नी मनोहरा देवी का बल्कि चाचा, भाई, और भाभी का भी देहांत हो गया। शेष कुनबे का बोझ उठाने में महिषादल की नौकरी अपर्याप्त थी। इसके बाद उनका सारा जीवन संघर्ष में बीता। निराला की जीवन की सबसे विशेष बात यह रही कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने सिद्धांत त्यागकर समझौते का रास्ता नहीं अपनाया, संघर्ष का साहस नहीं गंवाया। जीवन का उत्तरार्द्ध इलाहाबाद में बीता।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की पहली नियुक्ति महिषादल राज्य में ही हुई। उन्होंने 1918 से 1922 तक यह नौकरी की। उसके बाद संपादन, स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य की ओर प्रवृत्त हुए। 1922 से 1923 के दौरान कोलकाता से प्रकाशित 'समन्वय' का संपादन किया, 1923 के अगस्त से मतवाला के संपादक मंडल में कार्य किया। इसके बाद लखनऊ में गंगा पुस्तक माला कार्यालय में उनकी नियुक्ति हुई जहां वे संस्था की मासिक पत्रिका सुधा से

1935 के मधी तक संबद्ध रहे। उनकी पहली कविता जन्मभूमि प्रभा नामक मासिक पत्र में जून 1920 में पहला कविता संग्रह 1923 में अनामिका नाम से तथा पहला निबंध बंगभाषा का उच्चारण अक्टूबर 1920 में मासिक पत्रिका सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुआ।

अपने समकालीन अन्य कवियों से अलग उन्होंने कविता में कल्पना का सहारा बहुत कम लिया है और यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है। वे हिंदी में मुक्तकछंद के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। 1930 में प्रकाशित अपने काव्य संग्रह परिमल की भूमिका में उन्होंने लिखा है:

मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है।

नारी का हृदय कोमलता का पालना है, दया का उद्गम है, शीतलता की छाया है और अन्य भक्ति का आदर्श है। – जयशंकर प्रसाद

निराला ने 1920 ई. के आसपास से लेखन कार्य आरंभ किया। उनकी पहली रचना 'जन्मभूमि' पर लिखा गया। एक गीत था। लंबे समय तक निराला की प्रथम रचना के रुप में प्रसिद्ध 'जूही की कली' शीर्षक कविता, जिसका रचनात्मक निराला ने स्वंय 1923 ई. में पहली बार प्रकाशित हुई थी। कविता के अतिरिक्त कथा साहित्य तथा गद्य की अन्य विधाओं में भी निराला ने प्रभूत मात्रा में लिखा है। इनके द्वारा प्रकाशित कृतियों में अनामिका, परिमल, गीतिका, अनामिका–द्वितीय (इसी संग्रह में सरोज स्मृति और राम की शक्तिपूजा जैसी प्रसिद्ध कविताओं का संकलन है), तुलसीदास, कुकरमुत्ता आदि जैसे काव्यसंग्रह, अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा, चोटी की पकड़ जैसे उपन्यास, लिली, सुखी, सुकुल की बीवी, चतुरी चमार जैसे कहानी संग्रह शामिल हैं।

जीवन में जब भी कभी हत्तोसाहित हुई तो निराला की 'ध्वनि' कविता मार्गदर्शित किया करती है जिसकी पक्तियां इस प्रकार हैः

अभी न होगा मेरा अंत,
अभी–अभी ही तो आया है,
मेरे जीवन में मृदुल वसन्त,
अभी न होगा मेरा अंत।

संपूर्ण भारत में अंधकार रूपी अज्ञानता हटाने एवं ज्ञान रूपी ज्योति फैलाने हेतु माँ सरस्वती से अपनी कविता 'वर दे वीणावादिनी वर दे' के माध्यम से यह आह्वाहन करते हैं कि.....

"वर दे, वीणावादिनि वर दे!
प्रिय स्वतंत्र–रव अमृत–मंत्र नव
भारत में भर दे!
काट अंध–उर के बंधन–स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष–भेद तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!"
वर दे, वीणावादिनि वर दे।

निराला की सबसे लम्बी कविता 'सरोज स्मृति' उनकी पुत्री के मृत्यु के पश्चात् उन्होनें लिखा जिसकी पंक्तियां इस प्रकार हैः

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका।
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित काय।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की काव्यकला की सबसे बड़ी विशेषता है चित्रण–कौशल। आंतरिक भाव हो या रंग और गंध, सजीव चित्रण–कौशल। आंतरिक भाव हो या बाह्य जगत के दृश्य रूप, संगीतात्मक ध्वानियां हो या रंग और गंध, सजीव चरित्र हों या प्राकृतिक दृश्य, सभी अलग–अलग लगने वाले तत्वों को घुला–मिलाकर निराला ऐसा जीवंत चित्र उपस्थित करते हैं कि पढ़ने वाला उन चित्रों के माध्यम से ही निराला के मर्म तक पहुँच सकता है। निराला के चित्रों में उनका भावबोध ही नहीं, उनका चिंतन भी समाहित रहता है। इसलिए उनकी बहुत–सी कविताओं में दार्शनिक गहराई उत्पन्न हो जाती है। इस नए चित्रण – कौशल और दार्शनिक गहराई के कारण अक्सर निराला की कविताएं कुछ जटिल हो जाती हैं, जिसे न समझने के नाते विचारक लोग उन पर दुरुहता आदि का आरोप लगाते हैं। उनके किसान–बोध ने ही उन्हें छायावाद की भूमि से आगे बढ़कर यथार्थवाद की नई भूमि निर्मित करने की प्रेरणा दी। विशेष स्थितियों, चरित्रों और दृश्यों को देखते हुए इनके मर्म को पहचाना और उन विशिष्ट वस्तुओं को ही चित्रण का विषय बनाना, निराला के यथार्थवाद की एक उल्लेखनीय विशेषता है।

निराला पर अध्यात्मवाद और रहस्यवाद जैसी जीवन–विमुख प्रवृतियों का भी असर है। इस असर के चलते वे बहुत बार चमत्कारों से विजय प्राप्त करने और संघर्षों का अंत करने का सपना देखते है। निराला की शक्ति यह है कि वे चमत्कार के भरोसे अकर्मण्य नहीं बैठ जाते और संघर्ष की वास्तविक चुनौती से आंखे नहीं चुराते। कहीं–कहीं रहस्यवाद के फेर में निराला वास्तविक जीवन–अनुभवों के विपरीत चलते हैं। हर ओर प्रकाश फैला है, जीवन आलोकमय महासागर में डूब गया है, इत्यादि ऐसी ही बातें हैं। लेकिन यह रहस्यवाद निराला के भावबोध में स्थायी नहीं रहता, वह क्षणभंगुर ही साबित होता है। अनेक बार निराला शब्दों, ध्वनियों आदि को लेकर खिलवाड़ करते हैं। इन खिलवाड़ों को कला की संज्ञा देना कठिन काम है। लेकिन सामान्यतः वे इन खिलवाड़ों के माध्यम से बड़े चमत्कारपूर्ण कलात्मक प्रयोग करते हैं। इन प्रयोगों की विशेषता यह है कि वे विषय या भाव को अधिक प्रभावशाली रूप में व्यक्त करने में सहायक होते हैं। निराला के प्रयोगों में एक विशेष प्रकार के साहस और सजगता के दर्शन होते हैं। यह साहस और सहजता ही निराला को अपने युग के कवियों में अलग और विशिष्ट बनाती है।

अंचल कार्यालय भोपाल

यशपाल बंसल

पीएसबी – मेरी जीवन रेखा

संस्मरण

साल 1988 में हिसार (हरियाणा) से अपनी पढ़ाई पूरी करके मैं आईआईएम अहमदाबाद में रिसर्च एसोसिएट लगा हुआ था। मेरी परीक्षा/साक्षात्कार सब हो चुके थे, अप्रैल 1988 में मुझे बीएसआरबी से पत्र आया कि मुझे पंजाब एण्ड सिंध बैंक में कृषि क्षेत्र अधिकारी के पद पर चयनित किया गया है। मुझे उत्तर प्रदेश के जिला शाहजहांपुर में मोहिद्दीनपुर, पंजाब एण्ड सिंध बैंक शाखा ज्वाइन करने के आदेश मिले। फिर मैंने आईआईएम की नौकरी छोड़ने का मन बनाया और बैंक में ज्वाइन करने के लिए चल पड़ा। उस वक्त मेरे पास कुल संपत्ति अपनी चार पैंट–शर्ट और लगभग पाँच हजार रुपए नकद ही थे। बहुत ढूंढने के बाद आखिरकार मुझे शाखा मिली। जब मैं ज्वाइन करने शाखा पहुंचा तो पता चला कि उससे एक दिन पहले ही शाखा प्रबंधक का बाइक एक्सीडेंट में देहांत हो गया है लेकिन मैंने बैंक में ज्वाइन कर लिया। जिस स्थान पर वह शाखा थी उस गाँव में महीने में एक या दो दिन और वो भी एक या दो घंटो के लिए ही बिजली आती थी। गाँव में रहने खाने के लिए न तो कोई कमरा और न ही कोई भोजनालय या ढ़ाबा था। वहाँ से सात–आठ किलोमीटर दूर एक गाँव जैसा कस्बा बण्डा था जहाँ रहने के लिए एक कमरा मिल गया और खाने के लिए कुछ ढ़ाबे भी थे।

बैंक में ज्वाइन करने के बाद शादी के बारे में सोचने लगा, उस जमाने में बैंक ऑफिसर की नौकरी आईएएस के बाद दूसरे नंबर पर आती थी। मुझे गर्व होता है कि आईएएस नहीं बना तो कोई बात नहीं, पर उसके बाद वाली नौकरी तो मिल ही गई। जहाँ मेरी ब्रांच थी वहां से बण्डा 8 किलोमीटर बस में जाना पड़ता और जहाँ बस छोडती, वहाँ से 2 किलोमीटर गरम रेत की कच्ची सड़क पर पैदल जाना पड़ता। उस गाँव में आना किसी के बस की बात नहीं थी। उस जगह कोई गेस्ट हाउस या होटल नहीं थे जहाँ किसी को ठहराया जा सके। वहाँ से शाहजहांपुर शहर 60 किलोमीटर दूर था और दिन में परिवहन की केवल 2–3 बसें और उसमे भी

कम–से–कम तीन घंटे लगते थे।

6 साल के बाद मेरा ट्रांसफर हरियाणा में हो गया। जिन्दगी में नौकरी आगे चलती गई। 1997 में मैंने बैंक से लोन लेकर मारुती–800 खरीदी, उस वक्त ये बैंक वालों का सपना हुआ करता था और वर्ष 1999 में मैंने बैंक से लोन लेकर हिसार में एक छोटा सा घर भी बना लिया। सन् 2012 में मुझे स्केल–III बनाकर भोपाल भेज दिया गया और सतर्कता अधिकारी के पद पर मुझे लगाया गया। इस दौरान मैंने मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ को बारीकी से देखा, वहाँ घूमा और जीवन में अपार अनुभव लिए। वर्ष 2015 में गुडगाँव और जयपुर अंचल में ट्रांसफर हुआ तो पूरा राजस्थान, हरियाणा और उत्तर प्रदेश को देखने, समझने और घूमने का अवसर प्राप्त हुआ।

बैंक में रहते हुए और बैंक द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं के सहयोग से मैंने दार्जीलिंग, मुंबई, गोवा, चेन्नई, कन्याकुमारी, मुन्नार और पेरियार घूमा। इन सबसे बढ़कर 2009 में बैंक ने मुझे एलएफसी पर विदेश यात्रा के लिए अनुमति दे दी और मुझे सिंगापुर और मलेशिया जैसे देशों में भी घूमने का अवसर प्राप्त हुआ।

वर्ष 2016 में मुझे मुख्य प्रबंधक बनाया गया पहले बठिंडा और कुछ

ही महीनों में मेरा ट्रांसफर सिल्चर असम कर दिया गया। सिल्चर असम में रहते हुए मुझे और मेरे परिवार को पूरा उत्तर–पूर्व जैसे मिजोरम, असम, मेघालय, त्रिपुरा लगभग उत्तर–पूर्व के सभी राज्यों को करीब से देखने और जानने का अवसर प्राप्त हुआ, अगर बैंक नहीं होता तो शायद ही हम कभी ये सब देख पाते। आज बैंक में मेरे 33 बसंत बीत चुके हैं। अपने प्यारे बैंक के साथ अपने सेवाकाल अंतिम वर्ष में प्रवेश कर चुका हूँ।

जब भी मैं बैंक का परिचय–पत्र गले में डालता हूँ तो मुझे असीम गर्व की अनुभूति होती है। कितना कुछ दिया इस बैंक ने सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाई, एक अच्छा जीवन और सुन्दर भविष्य। एक दिन मेरा बेटा मेरे कार्यालय आ पंहुचा और कार्यालय में उसने देखा कि मेरे सामने एक कस्टमर लोन, एक ओटीएस और एक एफडीआर बनवाने के लिए खड़े थे। यह देखकर उसे लगा एक प्रबंधक के पास कितने लोगों की मदद करने की क्षमता होती है। आज मेरा बेटा और बेटी प्रतिष्ठित संस्थानों में अच्छे पदों पर कार्यरत है तो उसमे हमारे बैंक की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। परिवार वाले कहते हैं कि आपकी बैंक से शादी हुई है, रविवार को भी बैंक का काम और रोज रात नौ–दस बजे तक बैंक का काम लेकिन इस बैंक ने कितना कुछ दिया है उसके लिए जितना भी वक्त दिया जाए कम है, जितने भी इतवार आए–जाये वो भी कम। कहाँ ऐसा मौका मिलता है कि आप किसी गरीब किसान का भला अपने पद पर आसीन रहते हुए कर पाए, किसी के लोन को पास करवाकर उसके घर बनाने का सपना पूरा करवा पाएं। बैंक की न जाने कितनी ही वेलफेयर योजनाएं पिछले तैंतीस वर्षों में आँखों से गुजरी और असंख्य स्टाफ सदस्यों तक उन्हें पहुँचाया। अपने अंतिम वर्ष में भी पूरी ताकत से लोगों के लिए समर्पित होकर काम करता रहूँगा। कितना लिखूं हजारों पन्ने भर जाएंगे। बैंक ने जो दिया वह शब्दों में बयां नहीं हो सकता।

अंचल कार्यालय पटियाला

सुरेंद्र कुमार वैद्य

जरा सोचिए...!!!

प्रतिक्रिया शालीन तरीके से दिया जाए तो भी वह कार्य हो सकता है जो आक्रमक तरीके से दिए गए प्रतिक्रिया के फलस्वरूप होता है। घटना उस समय की है जब मैं मोटर–साइकिल सीखने की प्रारंभिक अवस्था में था। प्रारंभिक अवस्था अर्थात गाड़ी चलाने के नियम से पूर्ण रूप से परिचित न होना या अति उत्साह में वाहन चलाना। फिर भी दोस्तों से मिलने या यूं कहे थोड़ा रौब दिखाने के लिए बाजार में दुपहिया लेकर निकल पड़ा।

अब मंजिल पर पहुंचकर गाड़ी मोड़ने की बारी थी। सड़क के बीचो–बीच गाड़ी मोड़ने का फैसला किया। नया–नया उमंग था न आगे देखा न पीछे। मुड़ने के लिए सड़क के बीच से गाड़ी घुमाई। सामने से एक भाई सहाब अपनी मोटर–साइकिल पर बड़ी तेज गति से आ रहे थे। मैंने अचानक गाड़ी मोड़ी थी इसलिए उन्हें जोर से ब्रेक मारना पड़ा और वे गिरते–गिरते बचे, ले–देकर किसी तरह उन्होने अपने आप को गाड़ी सहित संभाला। अगल–बगल में नगर–निगम के बनाए हुए बड़े–बड़े नाले थे, यदि नाले में गिरते तो शरीर की दो–चार हड्डियाँ स्वाहा हो जाती। चेहरा गुस्से से तमतमाया हुआ था देखकर लगा कि मुझे दो–चार हाथ थमा देगें।

भाई सहाब अपनी दुपहिया खड़ी करके मेरे पास आए और बजाए इसके कि अपशब्द कहकर तमाचे लगाते, मुझे प्रेमपूर्वक समझाया और कहा "मोटर–सायकिल थोड़ा ध्यान से चलाओ। तुम्हारे साथ सड़क पर और भी लोग हैं कहीं तुम्हारे कारण उनको न चोट लग जाए। मैं तो अकेले ही था लेकिन हो सकता है बाकी लोग अपने बच्चों के साथ हों। तुम्हारी थोड़ी सी लापरवाही दूसरों को भारी पड़ सकती है।" उस सज्जन व्यक्ति ने बिना कोई बखेड़ा किए नम्रतापूर्वक मुझे समझाया और यकीन मानिए मुझे उसकी बातें अब भी याद है। यदि वह चाहता तो मुझे अपशब्द कहकर या हाथ चलाकर भी प्रतिक्रिया दे सकता था और वहाँ मौजूद लोग निश्चित तौर पर उससे सहमत होते लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। इस घटना के बाद मैंने भी सोचा लिया है कि यदि किसी व्यक्ति जिसने जानबूझ कर गलती नहीं की है, उसे कड़े, अपशब्द बोलकर प्रतिक्रिया देने या उससे बदला लेने के बजाय उसे प्रेमपूर्वक समझाइश दूंगा।

शाखा दल्ली राजहरा

बैंक में अंतरराष्ट्रीय महिला

अंचल कार्यालय अमृतसर

अंचल कार्यालय फरीदकोट

अंचल कार्यालय भोपाल

शाखा कोलकाता

शाखा जीएनई गिल, लुधियाना

अंचल कार्यालय नोएडा

अंचल कार्यालय लुधियाना

जिस घर में नारी की प्रतिष्ठा है उसी में देवताओं का वास है। - मनु

दिवस 2022 का आयोजन

अंचल कार्यालय फरीदकोट

अंचल कार्यालय देहरादून

अंचल कार्यालय बरेली

अंचल कार्यालय कोलकाता

मूल संथाली लेख

"[illegible]"

यशोदा मुर्मू

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स्त्री पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है, जितना प्रकाश अँधेरे से। – प्रेमचंद

[illegible]

यशोदा मुर्मू

बाहा पर्व

मूल संथाली लेख का हिंदी अनुवाद

हम सब जानते हैं हमारा देश महान है यहाँ अनेकता में भी एकता है। यहां अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग जाति–धर्म के लोग साथ में निवास करते हैं। सबकी अपनी वेश–भूषा, रहन–सहन, पर्व–त्यौहार विधि–विधान, नृत्य–गीत तथा भाषा–बोली विद्यमान है।

मैं, यहाँ संथाल समुदाय में मनाए जाने वाले बाहा पर्व के बारे में बताना चाहती हूँ। संथाल समुदाय के लोग भारतवर्ष में मूल रूप से झारखण्ड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, बिहार, असम, त्रिपुरा और छत्तीसगढ़ में बसे हुए हैं। इसके अलावा अब जीविका की तलाश में लोग दूसरे राज्यों में भी निवास करने लगे हैं।

संथालों के देवी–देवता निराकार और अनंत है। प्रकृति को सर्वशक्तिमान, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक सृष्टिकर्ता और न्यायकारी मानते हैं और प्रकृति पूजक है। जब पेड़–पौधों में नई पत्तियां आती है, तब माघ पर्व की यह माघ पूजा किसी निश्चित मैदान में मनाते हैं। इनका नया साल इसी "माघ माह" से ही शुरू होता है। इसके बाद आता है, फाल्गुन माह और इसी फाल्गुन माह में ही "बाहा पर्व" संपन्न होता है। जब वन, पहाड़, मैदान में हरियाली छा जाती है और पूरा वातावरण सखुवा फूल तथा महुवा फूलों से सुगंधित हो जाती है उस समय "बाहा पर्व" पर मनाने में मग्न हो जाते हैं। बाहा पर्व फाल्गुन माह के आरंभ से पूर्णिमा तक मनाते हैं। अलग–अलग गाँवों में अलग–अलग दिन तय किया जाता है। अधिकतर गाँव फाल्गुन पूर्णिमा के दिन को ही बाहा पर्व मनाते हैं। जब पूरा देश होली के रंग में रंगे होते हैं, तब संथाल समुदाय के लोग सुखवा फूल "सारजोम बाहा" तथा महुवा फूल "भातकोम गेले" से अपने देवी–देवताओं की पूजा करते हुए लोक गीत और लोक नृत्य में मग्न रहते हैं। संथालों में रंगों से होली नहीं खेली जाती। बाहा पर्व मनाने का मूल उद्देश्य उनके सुखी, समृद्ध और मंगलमय भविष्य की कामना है।

बाहा पर्व का विधि–विधान तीन दिनों का होता है। यह पर्व "जाहेर थान" में "नायके बाबा" द्वारा संपन्न होता है। गाँव के सामूहिक पूजा स्थान को "जाहेर थान" कहते हैं और पुजारी "नायके बाबा" कहलाते हैं। जाहेर थान में जिन देवी देवताओं को पूजा जाता है उनमें प्रमुख हैं "माराहबुरू, जाहेर आयो, गोंसाय एरा, मोणे

को, तुरूय को तथा माझी हाड़ाम"। इन तीन दिनों में प्रथम दिन "नायके बाबा" के घर से आरंभ होता है। घर की साफ–सफाई के साथ–साथ नायके बाबा को नियमों में रहना पड़ता है। पूजा सामग्री के साथ–साथ जाहेर थान के पूजा स्थल का साफ–सफाई अपने हाथों से करनी होती है, इसी को उम–नाड़का कहा जाता है। शाम होते ही गाँव के सभी लोग नायके बाबा के घर एकत्रित हो जाते हैं। विधि–विधान के अनुसार पूजा सामग्री निरीक्षण किया जाता है। इसके बाद बाहा पर्व से संबंधित लोककथा, लोकगीत, धुन और लोकनृत्य आरंभ हो जाता है। इन लोककथा, लोकगीत और धुन सुनते ही कुछ लोगों में आध्यात्मिक शक्ति प्रकट हो जाती है और देवी–देवताओं का नाम बोलने लगते हैं इसी को "रूम बोंगा" कहा जाता है। जिन–जिन लोगों ने जिन–जिन देवी देवताओं का नाम लिया है, उन–उन लोगों को उन देवी–देवताओं का पूजा सामग्री दी जाती है। वे लोग अपने–अपने पूजा सामग्री को नायके बाबा के पूजा कक्ष में रख देते हैं। इसके बाद फिर से लोक कथा, लोक गीत और धुन के माध्यम से उनकी आध्यात्मिक शक्ति को समाप्त किया जाता है इसी को "रूम बोंगा सुमान" कहा जाता है। रात भर बाहा पर्व से संबंधित लोक कथा, लोक गीत, धुन और नृत्य नायके बाबा के आंगन में चलती है।

द्वितीय दिन मूल पूजा जाहेर धान में होती है, इसी दिन को "बाहा सारदी माहा" कहा जाता है। नायके बाबा की सहायता के लिए एक "कुडाम नायके" भी होते हैं। नायके बाबा, कुडाम नायके और पहली रात देवी देवताओं का रूप धारण किए हुए सभी लोग सूर्योदय के पहले नहा–धोकर नायके बाबा के घर आते हैं। यहां बताना उचित है कि "रूम बोंगा" में औरतें शामिल नहीं होतीं। सिर्फ लोकगीत और

लोकनृत्य में शामिल होती हैं। धीरे–धीरे गांव के लोग भी नायके बाबा के घर एकट्ठा होने लगते है। इसके बाद नायके बाबा के घर में मूल पूर्व की लोककथा, लोकगीत, धुन और लोकनृत्य आरंभ होते हैं। लोककथा, लोकगीत, धुन और नृत्य आरंभ होते ही पहले दिन जिन–जिन लोगों पर देवी–देवताओं की आध्यात्मिक शक्ति उत्पन्न हुई थी, उन लोगों पर फिर से आध्यात्मिक शक्ति उत्पन्न होने लगती है और नायके बाबा के पूजा कक्ष से नायके बाबा के साथ अपनी–अपनी पूजा सामग्री लेकर आते हैं। नगाड़ों की धुन के साथ–साथ गाँव की औरतें बाहा पर्व से संबंधित लोकगीत और लोकनृत्य करते हुए नायके बाबा को जाहेर थान तक पहुंचा देते हैं। जाहेर थान पर पूजा स्थल के चारों ओर तीन चक्र नृत्य करते हुए औरतें नायके बाबा के घर वापस लौट आती हैं। पूजा के वक्त जाहेर थान में सिर्फ आदमी लोग रहते हैं। दोपहर तक पूजा संपन्न हो जाती है। दोपहर के बाद औरतें जाहेर थान जाने लगती हैं और पूजा स्थल पर नतमस्तक होने के बाद नायके बाबा से पूजा किए हुए "सरजोम बाबा", "सखुवा फूल" को साड़ी के आँचल में लेती हैं और अपना केश के जूड़े में लगाती हैं तथा आदमी लोग फूलों को दोनों हाथों से लेते हैं और अपने–अपने कान पर लगाते हैं। इसके बाद जाहेर थान के चारों तरफ बाहा पर्व के नृत्य और गीत होते हैं। सूर्यास्त के बाद नायके बाबा और साथ में गए सभी लोगों को नृत्य करते हुए उनके घर तक ले आते हैं। लौटने के वक्त औरतें अपने–अपने घर के सामने नायके बाबा के पैर धोती हैं और उनसे शगुन के फूल लेती हैं। नायके बाबा उनके सिर पर पानी छिड़काते हैं और फूल देते हैं। दूसरे टोलों की औरतें नायके बाबा के घर जाकर उनके पैर धोती हैं और फूल लेती हैं। यह रस्म देर रात तक चलती है।

अंतिम दिन को "आरू राडा" कहा जाता है, इसी दिन गांव के लोग नायके बाबा के घर इकट्ठा होते हैं और विधि–विधान के अनुसार लोक कथा और लोक गीतों के माध्यम से सुख, समृद्धि और मंगलमय होने की कामना करते हुए पूजा सामग्री को नायके बाबा के पूजा कक्ष में रखा जाता है।

इन तीन दिनों में बाहा पर्व से संबंधित अनगिनत लोकगीत गाये जाते हैं। सृष्टि के आरंभ से प्रगति एवं मानव के साथ संबंध, जीव–जंतु, प्रकृति और मानव का संबंध कितना गहरा है, लोक गीत की हर पंक्ति में सुनाई देती है। संथाल समुदाय प्रकृति पूजक हैं। प्रकृति की रक्षा उसका परम धर्म है।

शाखा– कमला नगर, दिल्ली

डॉ. नीरू पाठक

प्राज्ञ से पीएच.डी. तक

संस्मरण

जब यह पत्रिका आपको मिलेगी तब तक मैं सेवानिवृत्त हो जाऊंगी और शायद यह पत्रिका मुझे भी डाक के माध्यम से ही प्राप्त होगी। बैंक में लगभग 36 वर्षों का सफर तो अपने आप में बहुत सी यादें समेटे है लेकिन बैंक में मेरा हिंदी भाषा का सफर और हिंदी वाली मैडम का संबोधन मेरे लिए बहुत मायने रखता है।

बात 1987 की है मेरी पोस्टिंग बैंक के केन्द्रीय अंचल कार्यालय में अनुशासनात्मक कार्रवाई कक्ष में हुई थी। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस कॉलेज से अंग्रेजी माध्यम से बी.एस.सी. की थी और दिल्ली पॉलीटेक्निक से अंग्रेजी स्टेनोग्राफी का डिप्लोमा किया था। लेकिन मातृभाषा हिंदी थी तो हिंदी में कविता लिखने, गाने, और खाली समय में हिंदी पत्रिकाएं पढ़ने का शौक था। मैं सभी त्यौहार सभी के साथ मिलजुल कर मनाती थी। दिवाली के त्यौहार पर केन्द्रीय अंचल कार्यालय में राजभाषा अधिकारी श्री कंवर अशोक जी ने रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया। जहाँ मैंने स्वरचित कविता सुनायी और मुझे पुरस्कार भी मिला। कार्यक्रम की समाप्ति पर अशोक जी ने मेरी शिक्षा के विषय में पूछा और जब मैंने उन्हे बताया कि मैंने तो केवल आठवीं कक्षा तक ही हिंदी बढ़ी है तो उन्होंने मुझे प्राज्ञ करने के लिए कहा और यहाँ से बैंक में मेरा राजभाषा हिंदी से संबंध आरंभ हुआ। प्राज्ञ मैंने बहुत अच्छे अंकों से पास किया जिसके लिए मुझे मानदेय भी मिला। धीरे–धीरे मैंने बैंक की हिंदी दिवस पर होने वाली प्रतियोगिताओं में तथा दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्यवयन समिति के तत्वावधान में होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेना आरंभ किया।

मुझे सबसे पहले निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार मिला, जिसकी राशि थी 70 रुपए और मैंने उस राशि से खादी ग्रामोद्योग से माता सरस्वती की मूर्ति खरीदी। यह मानो सरस्वती माँ का ही आशीर्वाद था कि मेरे विभाग में उस समय अधिकारी श्री जी.एस. सचदेवा ने जो बाद में मुख्य महाप्रबंधक के पद से सेवानिवृत्त हुए, हिमाचल विश्वविद्यालय से एम.ए. हिंदी में करने के लिए फॉर्म लाकर दिया और आगे पढ़ने के लिए कहा। मैं कैसे कर पाउंगी, मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। मेरे विभाग के सहकर्मियों ने मेरा मलोबल बढ़ाया और मैंने बैंक से परमिशन लेकर फॉर्म भर दिया। घर में भी सभी ने कहा कि करो हम सहयोग करेंगे जिनमें मेरे पति और मेरे श्वसुर प्रमुख थे और उन्हीं के मित्र जो भगत सिंह कॉलेज में हिंदी के प्रोफेसर थे उनके सहयोग से मैंने हिंदी में द्वितीय श्रेणी में एम.ए. किया। मुझे विश्वास ही नहीं होता था कि आठवीं कक्षा तक हिंदी पढ़ने के बाद कैसे स्नातकोतर परीक्षा पास की। जबकि मेरा हाल उस समय ऐसा था कि कठिन शब्दों को समझने के लिए सरल हिंदी शब्दों का सहारा लेना पड़ता था। यह ईश्वर की अनुकंपा ही थी हिंदी दिवस पर होने वाली सभी प्रतियोगिताओं में मुझे प्रथम पुरस्कार मिलता। एक बार तो मिलीभगत का आरोप भी झेलना पड़ा पर वाद–विवाद प्रतियोगिता में मेरी सहभागिता और प्रदर्शन ने तत्कालीन आँचलिक प्रबंधक श्री सुभाष वोहरा जी को प्रथम पुरस्कार देने के लिए न केवल बाध्य कर दिया बल्कि उन्होंने

नारी किसी स्थूल वस्तु का नाम नहीं, वह तो क्षमा, शांति, करूणा आदि भावनाओं की प्रतिमूर्ति है। – रामधारी सिंह दिनकर

अपना व्यक्तिगत पेन भी मुझे दिया और कहा कि इसी प्रकार से राजभाषा से जुड़ी रहें।

समय अपनी गति से निरंतर बढ़ता जा रहा था। मेरे दो पुत्र थे घर की जिम्मेदारियाँ कुछ इस तरह थीं कि मैं राजभाषा अधिकारी नहीं बन पा रही थी। सन् 1995 में डॉ. प्रताप सिंह जी की पोस्टिंग हमारे केन्द्रीय अंचल कार्यालय मे हो गई, मेरा भाषा की ओर रूझान देखकर उन्होंने मुझे आगे पढ़ने के लिए प्रेरित किया। एम.ए. के पेपरों में एक पेपर निबंध का होता है। वैसे तो उसमें नंबर कम आते हैं लेकिन कुछ ऐसा संयोग रहा कि मैंने भक्तिकाल – हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग, विषय पर निबंध लिखा और मुझे 100 में से 72 अंक प्राप्त हुए। इससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची यदि मुझे आगे पढ़ना है तो विषय भक्तिकाल से संबंधित ही होना चाहिए। मैं इसी क्षेत्र में लेखन कार्य कर सकती हूँ। माता–पिता के संस्कार तथा सहकर्मियों का सहयोग, मेरा भी यह स्वर्ण काल था जो मुझे डॉ. प्रताप सिंह, डॉ. के. के. शर्मा जैसे सहकर्मी मिले जिनके सहयोग से मुझे चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में डॉ. विष्णु शरण शर्मा जी के दिशा–निर्देशन में पीएच.डी. में दाखिला मिला। मेरा विषय था भक्तिकालीन कृष्ण काव्य में उदात्त तत्व। मुझे मेरा मनचाहा विषय मिल गया जैसे एक पंथ दो काज। अध्यात्म एवं शिक्षा दोनो एक साथ, भगवान ने मेरे मन की सुन ली थी। वो चार वर्ष जब मैंने डॉ. विष्णु शरण शर्मा के मार्ग–दर्शन में कार्य किया वो मेरे भी जीवन का भी स्वर्णिम काल था। शायद भगवान का कार्य, उनकी मर्जी से, उनके लिए ही हो रहा था। ऐसे भक्तों, आचार्यों, पंथ प्रमुखों से मिलने का मौका मिला, जिनके दर्शन भी मेरे जैसे तुच्छ प्राणी के लिए असंभव थे।

यह केवल एक डिग्री मिलने की यात्रा नहीं थी बल्कि मेरी सोच, मेरे विश्वास और मेरे जीवन के लक्ष्य को निर्धारित करने की भी यात्रा थी। मेरे बैंक के सहकर्मी ऐसे सहयोग करते थे कि जैसे वो भी मेरे साथ पढ़ाई कर रहे हों। लायब्रेरी से पुस्तकें लाना, मेरे शनिवार को मेरठ जाने पर मेरे कार्य में न केवल सहयोग करना बल्कि मेरी अनुपस्थिति में मुझे आबंटित कार्य भी कर देना। अंचल प्रबंधक द्वारा समय–समय पर पढ़ाई से संबंधित प्रश्न पूछना और मेरा मनोबल बढ़ाना। मुझमें भी जैसे अतिरिक्त ऊर्जा का प्रवेश हो गया था। घर और बैंक की सभी जिम्मेदिरियों का निर्वहन करते हुए मेरठ जाना और समयानुसार कार्य करना। मेरा कार्य तीव्र गति से आगे बढ़ रहा था। सब कैसे हो रहा था, मुझे आज भी जैसे विश्वास नहीं होता। ऐसे में मुझे श्री राम के अनन्य भक्त कवि तुलसीदास जी की चौपाई याद आतीः

जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करे सब कोई।

ईश्वर मेरे साथ थे, मुझे ऐसा लगता कि जैसे सभी मेरा सहयोग करने को तत्पर हैं। माता–पिता और भगवान के आशीर्वाद से और मेरा काम निर्धारित समय में ही पूरा हो गया। आज भी उस समय के बारे में सोचती हूँ तो आँखों में आंसू आ जाते हैं वस्तुतः वह मेरा काम था ही नहीं वो मुझ पर ईश्वर की ऐसी अनुकंपा थी जो शब्दातीत है जिसने मेरे जीवन की दशा और दिशा दोनों ही बदल दीं। सन् 1998 में सेंट्रल अंचल कार्यालय कनॉट प्लेस से सिद्धार्थ एनक्लेव में शिफ्ट हो गया और मेरा तबादला मेरे घर के पास जनकपुरी शाखा में हो गया।

सन् 1998 से 2008 तक मैंने अपने घर के पास की शाखा जनकपुरी तथा शाखा तिलक नगर में कार्य किया। उसके पश्चात सितंबर 2008 में अधिकारी के पद पर प्रमोशन होने के बाद प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग में कार्य करने का मौका मिला। जीवन की दिशा फिर बदली। विभाग में आने के बाद फिर से लेखन कार्य आरंभ किया। कहा जाता है कि यदि आपका शौक आपका कार्य हो तो आप दुगुने उत्साह से उस कार्य को कर सकते हैं, वह आपको कभी बोझ नहीं लगेगा। कुछ समय के लिए प्रधान कार्यालय के अन्य विभाग में भी कार्य किया लेकिन सन् 2014 में मेरी कार्य शैली को देखते हुए बैंक प्रबंधन ने मुझे फिर से प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग में नियुक्त किया और उसी वर्ष मुझे प्रबंधक के पद पर प्रमोशन मिली। मुझे विभाग की विभिन्न रिपोर्टों के साथ विशेषकर बैंक की हिंदी पत्रिका राजभाषा अंकुर से संबंधित कार्य दिया गया और मुझे यह कहते हुए बहुत प्रसन्नता होती है कि पिछले वर्षों में पत्रिका सदैव भारतीय रिजर्व बैंक तथा दिल्ली बैंक नराकास से पुरस्कृत होती रही है। बैंक का इतिहास लिखने का गौरव भी मुझे प्राप्त हुआ तथा वर्ष 2021 में पुनः आरंभ की गई बैंक की तिमाही गृह पत्रिका नवोदय का संपादन कार्य करने का भी मौका मिला। कुल मिलाकर मैंने अपने कार्य को कभी बोझ नहीं समझा बल्कि सभी कार्यों का निर्वहन आनंदपूर्वक किया शायद इसीलिए समय कितनी तेजी से व्यतीत हुआ पता ही नहीं चला।

बैंक की सेवाओं से जुड़े लगभग 37 वर्ष कब बीत गए ऐसा लगता है जैसे कल की ही बात हो। बैंक ने मुझे इतना दिया, जिससे उऋण होना मुश्किल है। मेरी हृदय से इच्छा है कि अपनी भाषा से जुड़े, आपकी राह बहुत आसान हो जाएगी।

शुभकामनाओं सहित...

अंचल कार्यालय दिल्ली–।।

देवेंद्र कुमार

प्रणेता

(सच्ची घटना से प्रेरित कहानी)

चारू कुछ समय से घरेलू हिंसा का शिकार हो रही थी। वह तंग होकर अपने मायके आई थी। सांध्य बेला में पिता ने उससे पूछा बेटी क्या है? चारू ने रुआंसे से शब्दों में अपना सारा वृत्तांत कह सुनाया। वह कहने लगी मेरे ससुराल में पैसों की कोई कमी नहीं है। वहां सब लोग मुझे बहुत प्यार करते हैं, पर योगेश (चारू के पति) मुझे रोज शराब पीकर मेरे साथ मारपीट करते हैं। मैं इसी बात से दुखी हूं। योगेश की मोबाइल पर मैंने किसी और औरत की आपत्तिजनक तस्वीरें देखी हैं। ऐसा लगता है मानो उस कलमुही ने मेरे पति को जकड़ लिया है। पहले वह ऐसे नहीं थे। वह मेरा बहुत ख्याल रखते थे। पर अब ऐसा लगता है मानो मैं एक घर में नहीं, बल्कि किसी यातना स्थल में रह रही हूं। वह मुझ पर बहुत अत्याचार करते हैं। मुझे मारते–पीटते हैं और घर से निकल जाने को कहते हैं। मैं इन दोनों बच्चों को लेकर कहां जाऊं? मुझे अपना और इन बच्चों का भविष्य अंधकारमय दिख रहा है। आप ही मुझे बताएं कि मैं क्या करूं?

चारू के पिता अवाक् उसको देख रहे थे। उनकी आंखों में आंसू थे। वह सोच रहे थे कि जिस फूल सी सुंदर बच्ची को उन्होंने बड़े लाड–चाव से पाला था उसका अब क्या होगा और वह रुआंसे आँखों से बोले– बेटी कुछ दिन तुम यहीं रह जाओ। मैं कुछ करता हूं। चारू के पिता अपने एक दोस्त को साथ लेकर चारू के ससुराल चले गए। उन्होंने अपने समधि से बात की। चारू के ससुर जो एक प्रतिष्ठित उद्योगपति हैं बोले– शर्मा जी आप चिंता मत करो, मैं योगेश को समझाता हूं। शाम को जब योगेश आया तो तीनों ने योगेश को समझाना शुरू किया पर योगेश ने उनकी एक न सुनी और कहा कि मुझे तलाक चाहिए। इस बात पर सब हैरान हो गए। सब ने कहा कि इन बच्चों की तरफ भी देखो। इनका भविष्य दांव पर लग जाएगा पर योगेश ने कहा मुझे सिर्फ और सिर्फ तलाक चाहिए। चारू के पिता ने सोचा कि अब क्या करें। वह वापस घर पर आकर वर्तमान स्थिति का आकलन करने लगे। तभी योगेश के पिता का फोन आया उन्होंने कहा– शर्मा जी, जब हम चारू को अपने घर लाए थे तब मैंने उससे कहा था 'तुम भी मेरी बेटी हो' और आज मैं अपनी बेटी को ऐसी हालत में अकेला नहीं छोड़ सकता। आप चिंता ना करें मैं इस समस्या का समाधान निकाल लूंगा।

दो दिन बाद चारू के ससुर का दोबारा फोन आया। वह कहने लगे शर्मा जी आप चारू को यहां भेज दीजिए मैंने पुलिस में शिकायत कर दी है और अपनी सारी संपत्ति चारू के नाम कर दी है साथ ही योगेश को अपनी कंपनी से निकाल दिया है। अब देखते हैं वह कैसे लाइन पर नहीं आता। चारू अपने ससुराल आ गई। अब घरेलू हिंसा तो बंद हो गई थी पर एक नई समस्या शुरू हो गई थी, योगेश देर रात को आता और एक अलग कमरे में सोता। वह अपने बच्चों से भी नहीं बोलता था। सुबह उठकर चल देता।

कुछ दिन तक ऐसा ही चला। अचानक फिर एक दिन वह जल्दी घर में आया और चारू की गोद में सिर रखकर रोते हुए बोला– मुझे माफ कर दो जानू। मैंने तुम्हें धोखा दिया है और बदले में मुझे भी धोखा मिला है। वह आज मुझे धोखा देकर किसी और के साथ चली गई। मुझे आज पता चला कि वह सब यह मेरे पैसे पर ऐशो–आराम के लिए मुझे अपनी बातों में फंसा कर रखती थी। उसने मुझे ब्लैकमेल करना भी शुरू कर दिया था। अब जबकि मेरे सारे पैसे खर्च हो गए और मेरे पास कुछ नहीं बचा तो वह किसी और के साथ चली गई। मुझे माफ कर दो मैंने तुम्हारा बड़ा दिल दुखाया है। चारू अवाक सी अपने योगेश को देख रही थी। उसकी आंखों से आंसुओं की धार अविरल बह रही थी, पर यह आंसू खुशी के थे। उसने योगेश को प्यार से गले लगाया और कहा– जो भूला शाम को घर आ जाए उसे भूला नहीं कहते। योगेश ने कहा– मैं अब फिर से मेहनत करूंगा और तुम्हें अब कभी अकेला नहीं छोडूंगा, न ही कभी धोखा दूंगा। अब कमरे में एक संतोष भाव के साथ शांति छाई हुई थी, मानो घने अंधकार भरे आसमान में सूरज निकल आया हो और शीतल हवा बह रही हो...।

अंचल कार्यालय गुरुग्राम

विश्व हिंदी दिवस 2022

विश्व हिंदी दिवस को स्मरणीय बनाने के उद्देश्य से इस वर्ष बैंक के प्रधान कार्यालय में 10 जनवरी 2022 को कार्मिकों के लिए एक ऑन–लाइन सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता कार्मिकों की मातृभाषा के अनुसार तीन अलग–अलग श्रेणियों अर्थात 'क' क्षेत्र, 'ख' क्षेत्र तथा 'ग' क्षेत्र में आयोजित की गई जिसमें कार्मिकों को उनके भाषाई क्षेत्र के आधार पर पुरस्कृत किया गया। विजेताओं का उत्साहवर्धन करने के लिए उन्हें बैंक के कार्यकारी निदेशक महोदय के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया।

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ
पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
पी.एस.बी
Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)
जहाँ सेवा ही जीवन - ध्येय है
पीएसबी
अपना वाहन
आज़ादी का अमृत महोत्सव
PSB UnIC
You & I Connected
ईएमआई प्रति लाख
₹ 1519/-
7.20%* ब्याज दर
100%* ऑन-रोड फाइनेंस
शून्य पूर्व भुगतान शुल्क
ऋण वापसी की अवधि 7 वर्षों तक
* नियम एवं शर्तें लागू | ब्याज दर रेपो रेट से जुड़ा
1800 419 8300 (Toll Free)
हमारा अनुसरण करें @PSBIndOfficial